पुस्तक :
विचार - रेखा

सम्पादन :
श्री गणेश मुनि जी शास्त्री,
साहित्यरत्न
[सुशिष्य, प. प्र. श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनि जी म.]

प्रेरक :
विद्याविनोदी–श्री जिनेन्द्र मुनिजी

प्रकाशक :
अमर जैन साहित्य सदन
जोधपुर (राज.)

प्रवेश :
वी० सं० २४९१
सन् १९६६

प्राप्तिस्थल :
श्री सरदारचन्दजी जैन
'बुकसेलर'
त्रिपोलिया, जोधपुर

मूल्य :
[illegible]

मुद्रक :
साधना प्रेस, जोधपुर

अर्थ सहयोगी :
श्रीमान् पारसमल वस्तीमलजी, भूरट
अजीत (मारवाड़)

समर्पण.....

जिस माता ने मुझे जन्म दे कर ही नही,
वरन् जीवन में सुन्दर सस्कार भर कर
मेरे जीवन को मुनि पद के योग्य बनाया है.

बस उसी त्याग व वात्सल्यता की प्रतिमूर्त्ति
महासती श्री प्रेम कुँवरजी म के कर-कमलो मे
सादर समर्पित है.

आपका मँझला पुत्र
—गणेश मुनि

दो बात...

: १ :

विचार रेखा—एक सुरम्य उद्यान है. इसमें अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, उपकार, व उदारता के नव्य-भव्य कमनीय पुष्पों की सौरभ.

प्रेम, सगठन, धर्म और मानवता के दिलकश—जाही, जूही, केतकी व केवडा के पौधे.

मैत्री, संतोष, संयम, सुख, शान्ति व विवेक के रसदार सुकोमल फल.

तथा दया, दान, क्षमा, और करुणा के फौवारे पाठकों के मन-मस्तिष्क को अपूर्व आनन्द प्रदान करेंगे. यदि पाठकवृन्द एकान्त व शांत वातावरण के क्षणों में रह कर—प्रस्तुत पुस्तक की परिक्रमा कर सका तो वह निश्चय ही इस मनोहर उद्यान की झाँकी पा सकेगा.

: २ :

विचार रेखा—नीति ग्रन्थों का नवनीत है. आगमों का मन्थन है. और है उपदेशकों के अनुभवों का आलोक.

विचारकों का हृदय विराट् सागर है, उस में समय-समय पर चिन्तन की तरगें उठती हैं और वे तरगें ही जब वाणी द्वारा अभिव्यक्त होती हैं तो सूक्तिया कहलाती हैं. सूक्तियों में समुद्र सी गामीर्यता और हिमालय सी विराट्ता तथा मोतियों सी चमक होती है. वस्तुतः सूक्तियों में मानव के जीवन को बदलने की अपूर्व क्षमता होती है.

अध्ययन की वेला में—जिन विमल विचारों ने मेरे मन-मस्तिष्क व हृदय को छुआ है, चुम्बकवत् आकर्षित किया है. उन्हीं को मैं 'विचार रेखा' के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं.

विज्ञान के इस राकेटवाद के युग में जन-जीवन अत्यधिक भयभीत है. विश्व क्षितिज पर चारों ओर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं. अन्तर्राष्ट्रों के बीच

तनाव की स्थिति शैतान की आत की तरह दिनानुदिन बढ़ती चली जा रही है. न जाने कब और किस स्थिति में मानव प्रलय की प्रबल आंधी के प्रवाह में वह जायगा जिसकी सहज कल्पना नहीं की जा सकती. ऐसी घोर-विषमता व निराशा की महा निशा में पाठकों को 'विचार रेखा' एक प्रकाश-स्तम्भ का काम देगी. इसी विश्वास के साथ......!

जैन स्थानक
खाडप (मारवाड़)
रक्षा बन्धन
१२-८-६५

—गणेश मुनि, शास्त्री
साहित्यरत्न

गणेश मुनिजी, शास्त्री

•

विचार रेखा

•

प्रथम अध्याय

— अ

- अहिसा
- अस्तेय
- अपरिग्रह
- अनासक्ति
- असयम
- अहकार
- आत्मा
- आत्मज्ञान
- आसक्ति
- आनन्द
- आशा
- आलोचना
- इच्छाएँ
- ईश्वर
- उपकार
- उदारता
- उत्साह

अहिंसा

किसी भी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का सार है. अहिंसा-सिद्धान्त ही सर्वश्रेष्ठ है, विज्ञान केवल इतना ही है.

— भगवान महावीर

सब प्राणियो को दु.ख अप्रिय लगता है, अत. किसी भी प्राणी की हिंसा नही करनी चाहिए

— भगवान महावीर

जैसे तुझे दु ख अप्रिय है, इसी प्रकार ससार के सब जीवो को दु ख अप्रिय है—ऐसा समझ कर सब प्राणियो पर आत्मवत् आदर एवं उपयोगपूर्वक दया करो.

— भक्त परिज्ञा

अहिसा के माने अपने भाषण से या कृति से किसी का भी दिल न दुखाना, किसी का अनिष्ट तक नही सोचना

— स्वामी विवेकानन्द

अहिंसा का तकाजा है कि हम दूसरो को अधिक से अधिक सुविधाए प्राप्त करा देने के लिए स्वय अधिक से अधिक असुविधाएँ सहें—यहा तक कि अपनी जान भी जोखम मे डाल दें.

— गाधी

तुम्हारी जान पर भी आ बने तब भी किसी की प्यारी जान मत लो.

— तिरुवल्लुवर

अहिंसक को अक्षय तप का फल मिलता है, अहिंसक सदा यज्ञ करता है, अहिंसक सब प्राणियो को मात-पिता की तरह लगता है.

— महाभारत

❧

अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना.

— गांधी

❧

अहिंसा के सामने हिंसा निकम्मी हो जाती है. अगर—आज तक ऐसा नहीं हुआ है तो उसका कारण यह है कि हमारी अहिंसा दुर्बलो और भीरुओ की थी.

— गांधी

❧

समूची सृष्टि को अपने मे समा लेने पर ही अहिंसा की पूर्ति होती है.

— विनोबा

❧

अगर तुझे अपना नाम बाकी रखना है तो किसी को दुःख पहुचाने की कोशिश मत कर.

— जामी

❧

जहा तक हो सके एक दिल को भी रज न पहुचाओ, क्योकि एक आह सारे ससार मे खलबली मचा देती है

— अज्ञात

❧

मेरी अहिंसा सारे जगत् के प्रति प्रेम मागती है.

— गांधी

अहिंसा का अर्थ है अनन्त प्रम और उसका अर्थ है कष्ट सहने की अनन्त शक्ति.

— गांधी

अहिंसा क्षत्रिय धर्म है. महावीर क्षत्रिय थे. बुद्ध क्षत्रिय थे. राम, कृष्ण आदि क्षत्रिय थे. ये सब थोड़े या बहुत अहिंसा के उपासक थे.

— गाधी

अहिंसा निर्बल और डरपोक का नही, वीर का धर्म है.

— गाधी

अहिंसा परम् धर्म है. अहिंसा परम् तप है. अहिंसा परम् ज्ञान है. अहिंसा परम् पद है.

— भागवत

शस्त्रीकरण दौड मे शामिल होना हिन्दुस्तान के लिए आत्मघात करना है भारत अगर अहिंसा को गवा देता है, तो ससार की अन्तिम आशा पर पानी फिर जाता है.

— गाधी

अहिंसा का परिणाम देर से निकलता है, हिंसा का शीघ्र निकल आता है.

— गाधी

कीट को और इन्द्र को जीने की समान आकाक्षा है, और दोनो को मृत्यु का भय भी समान है.

— इतिहास समुच्चय

अहिंसा ही जगत् की माता है. अहिंसा ही आनन्द का मार्ग है. अहिंसा ही शाश्वती श्री या शोभा है.

— ज्ञानार्णव

❧

जोर-जबर्दस्ती से जंगल के शेर को बस में लाया जा सकता है, मगर जबर्दस्ती एक छोटा-सा फूल भी विकसित नही किया जा सकता.

— शरत्‌चन्द्र

❧

यह जमाना हथियारबन्द कायरता का है. कायरता ने अपने हाथ मे हथियार इसलिए रखे है कि, वह दूसरो के हमले से डरती है और स्वयं हथियार इसलिए नही चलाती कि, उसे हिम्मत नही होती. जो डर के मारे हथियार चला नही पाती उसी का नाम कायरता है. इस कायरता से इन्सान को उबारने वाली केवल एक ही शक्ति है—अहिंसा !

— राष्ट्रपति राधाकृष्णन्

❧

जो व्यक्ति जरूरत-मदो के साथ बाट कर रोटी खाता है—और हिंसा नही करता, वह ससार में रहते हुए भी परमात्मा की गोद में रहता है.

— तिरुवल्लुवर

❧

वैर कभी वैर से शान्त नही होता, अवैर से ही शान्त होता है—यही लोक का सनातन नियम है.

— धम्मपद

❧

जो अपने को प्रतिकूल अर्थात् दुखदायक प्रतीत हो वैसा व्यवहार दूसरो के साथ न करो.

— महाभारत

जो किसी को दुख नही देता, और सबका भला चाहता है, वह अत्यन्त सुखी रहता है.

— मनुस्मृति

¤

जीवो का आधार-स्थान पृथ्वी है वैसे ही भूत और भावी तीर्थङ्करो का आधार-स्थान शान्ति अर्थात् अहिंसा है.

— भगवान् महावीर

¤

हे पार्थिव ! तुझे अभय है. तू भी अभयदाता बन. इस क्षणभंगुर संसार मे जीवों की हिंसा के लिए तू क्यो आसक्त हो रहा है ?

— उत्तराध्ययन सूत्र

¤

इन जीवों के प्रति सदा अहिंसक वृत्ति से रहना जो कोई मन, वचन और काया से अहिंसक रहता है, वही आदर्श संयमी है.

— दशवैकालिक सूत्र

¤

ईसा मसीह की अहिंसा मे माँ का हृदय है, और कनफ्यूशियस की अहिंसा मे तो हिंसा की रोकथाम मात्र है, तथा बुद्ध की अहिंसा तो हिंसा को भी साथ ले कर चली है, और महात्मा गाधी की अहिंसा जितनी राजनैतिक है, उतनी धार्मिक नहीं, पर भगवान् महावीर की अहिंसा में उस विराट पिता का हृदय है, जो सुमेरु सा सुदृढ कठोर कर्त्तव्य लिए है.

— लक्ष्मीनारायण सरोज

अस्तेय

दाँत कुरेदने का तिनका भी उसके मालिक के दिये बिना ग्रहण नही करना, साथ ही निरवद्य और एषणीय वस्तुएँ ही ग्रहण करना, ये दोनो बातें अत्यन्त कठिन हैं.

— भगवान महावीर

वस्तु सजीव हो या निर्जीव, कम हो या ज्यादा, वह यहाँ तक कि दाँत कुरेदने की सलाई के समान तुच्छ वस्तु भी उसके स्वामी को बिना पूछे सयमी पुरुष न स्वय लेते है, न दूसरे से लिवाते तथा जो कोई लेता हो, उसे आज्ञा भी प्रदान नही करते.

— दशवैकालिक सूत्र

जिस वस्तु की हमे आवश्यकता नही है उसे रखना, लेना भी चोरी है

— गांधी

शारीरिक उद्योग करना मनुष्य का धर्म है. जो उद्यम नही करता, वह चोरी का अन्न खाता है.

— गाधी

मनुष्य के पास उतना ही होना चाहिए जितने से उसका भरण-पोषण हो जाय. जो इससे अधिक एकत्र करता है, वह एक प्रकार की चोरी है

— भागवत

ईश्वर ने आदमी को अन्न के लिए श्रम करने के लिए पैदा किया है, और कहा कि जो श्रम किये बगैर खाता है, वह चोरी है.

— गांधी

ॐ

बिना दिये लेना—वह अस्तेय अर्थात चोरी है.

— आचार्य उमास्वाति

अपरिग्रह

ज्ञानी पुरुष वस्त्र, पात्र आदि सर्व प्रकार की साधन सामग्री के संरक्षण या स्वीकार में महत्व वृत्ति का अवलम्बन नही रखते. अधिक क्या ? वे शरीर के प्रति भी ममत्व नही रखते.

— भगवान् महावीर

ॐ

यदि धन-धान्य से परिपूर्ण यह सारा संसार किसी मनुष्य को दे दिया जाय तो भी इससे उसे सन्तोष नही होगा. लोभी आत्मा की तृष्णा इस प्रकार शान्त होनी कठिन है.

— उतराध्ययन सूत्र

ॐ

भाग्यवान वह है जिसका धन गुलाम है और अभागा वह है जो धन का गुलाम है.

— वाल्तेयर

धन का नित्य संचय करना चाहिए, लेकिन वहुत अर्थात आवश्यकता से अधिक सचय नही करना चाहिए.

— हितोपदेश

यदि तुम अपनी आय से कम में निर्वाह कर सकते हो, तो निश्चय ही जानो कि पारस पत्थर तुम्हारे पास है.

— वेंजामिन फ्रैंकलिन

यदि तुम थोडे मे ही अपना काम अच्छी तरह चलाना चाहते हो तो किसी चीज मे पैसा लगाने से पहले स्वयं अपने से दो प्रश्न पूछ लिया करो. १ क्या सचमुच मुझे इस चीज की जरूरत है ? २ क्या इसके विना भी मेरा काम चल सकता है ?

— सिडनी स्मिथ

मेरी हार्दिक इच्छा है कि, मेरे पास जो भी थोडा वहुत धन शेष है, वह सार्वजनिक हित के कामो में यथाशीघ्र खर्च हो जाय. मेरे पास अन्तिम समय मे एक पाई भी न वचे, मेरे लिए सव से बड़ा सुख यही होगा.

— पुरुषोत्तमदास टडन

सग्रहवृत्ति मानव समाज की पीठ का जहरीला फोड़ा है. उसका आपरेशन हो तभी उसमें रहा हुआ काला वाजार और अप्रमाणिकता का खून तथा उससे फैलने वाली शोषणवृत्ति की दुर्गन्ध दूर हो सकती है.

— लेनिन

मैं सोने की दीवार खडी करना नही चाहता, न राकफेलर और कारनेगी वनने की मेरी इच्छा है. मैं केवल इतना धन चाहता हूँ कि जरूरत की मामूली चीजो के लिए तरसना न पड़े.

— अज्ञात

देहधारी को पेट भरने भर का अधिकार है. इससे अधिक जो अपना मानता है वह चोर है और दण्ड का पात्र है.

— भागवत्

❑

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम उस किसी चीज का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नही है.

— गांधी

❑

उसके दु:ख दूर हो गये जिसे मोह नहीं है, उसका मोह मिट गया जिसे तृष्णा नही है, उसकी तृष्णा नष्ट हो गई जिसे लोभ नही है, उसका लोभ खत्म हो गया, जो अकिंचन है.

— भ. महावीर

❑

जो साधक अल्पाहारी है, अल्पभाषी है, अल्पशायी और अल्प-परिग्रही है, उसे देवता भी प्रणाम करते हैं.

— आवश्यक-निर्युक्ति

• अनासक्ति

ज्ञानी संसार मे रहते हुए भी कमल की तरह उससे अपना अस्तित्व अलग-थलग रखते है.

— भ. महावीर

अनासक्ति की कसौटी यह है कि फिर उस वस्तु के अभाव में हम कष्ट का अनुभव न करें.

— हरिभाऊ उपाध्याय

हजार वर्ष तक विना मन लगाये नमाज पढ़ने और रोजा रखने के वजाय एक कण के वरावर ससार के प्रति सच्ची अनासक्ति वढाना अधिक उत्तम है

— हुसैन वसराई

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योकि अनासक्त कार्य भगवान् की भक्ति है.

— गांधी

आसक्ति दु:ख है, अनासक्ति सुख है

— योगवाशिष्ठ

अनासक्त पुरुष कर्म करते हुए भी कर्म-वन्धन मे नही पड़ता है.

— योगवाशिष्ठ

आसक्ति वन्ध का कारण है, अनासक्ति मोक्ष का.

— योगवाशिष्ठ

असंयम

काम-भोग शल्य है, विष है और विषधर के समान है.

— भ. महावीर

काम-भोगो मे आसक्त प्राणी कर्मों का संचय करते है और कर्मो से भारी हो कर ससार मे परिभ्रमण करते है.

— आचाराग सूत्र

❀

काम-भोग क्षण-मात्र सुख देने वाले है तो चिरकाल तक दु.ख देने वाले भी है. उनमें सुख बहुत थोडा है, अत्यधिक दु.ख ही दुःख है. मोक्ष सुख के वे भयंकर शत्रु है और अनर्थो की खान है.

— उत्तराध्ययन सूत्र

❀

दाद के खुजलाने से पहले कुछ सुख मिलता है, बाद मे असह्य दु·ख इसी प्रकार भोग पहले सुखदायक प्रतीत होते हैं बाद मे अत्यन्त दुखदायी.

— रामकृष्ण परमहस

❀

जो व्यक्ति विषय-तृप्ति के रास्ते पूर्ण होना चाहता है वह अपने को धोखा देता है.

— सत पिंगल

❀

उस आदमी से बढ कर रास्ते से भटका हुआ और कौन है जो अपनी ख्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है.

— कुरान

❀

इन्द्रियो से मिलने वाले सुख दुखरूप है, पराधीन हैं, बाधाओ से परिपूर्ण है, नाशशील हैं, बन्धनकारी है, अतृप्तिकर है.

— आचार्य कुन्द कुन्द

❀

जिसकी इन्द्रियाँ वश मे नही, वह एक ऐसा मकान है जिसकी दीवारें गिर चुकी हैं.

— सुलेमान

जैसे किंपाक फल रूप, रंग और रस की दृष्टि से प्रारंभ में खाते समय तो बड़े मधुर और मनोरम लगते है, पर बाद में जीवन के नाशक हैं. वैसे ही काम-भोग भी शुरू मे बड़े मीठे और मनोहर मालूम देते हैं, पर विपाक काल में वे सर्वनाश कर लेते हैं.

— उत्तराध्ययन

अहँकार

नम्रता से अभिमान को जीते.

— भ. महावीर

जब तक 'मैं' और 'मेरा' का बुखार चढा हुआ है तब तक शान्ति नही मिल सकती.

— भ. महावीर

अहंकार रूपी बादल के हट जाने पर चैतन्य रूपी सूर्य के दर्शन होते है.

— योग वाशिष्ठ

कोयल दिव्य आम्र-रस का आस्वादन कर के भी गर्व नही करती किन्तु मेंढ़क कीचड़ का पानी पी कर टर्राने लगता है.

— अज्ञात

अहंकार को लगता है कि 'मैं' न हुआ तो दुनिया कैसे चलेगी ?

— अज्ञात

सुख वाहर से मिलने की चीज नही, हमारे ही अन्दर है, मगर अहकार छोड़े वगैर उसकी प्राप्ति नही होने वाली.

— विवेकानन्द

❧

मुर्गा समझता है कि सूरज वांग सुनने के लिए ही उगता है

— जार्ज इलियट

❧

अक्सर मुर्गी, जिसने सिर्फ अण्डा दिया है, ऐसा फड़फड़ाती है जैसे किसी नक्षत्र को जन्म दिया हो

— मार्क ट्वेन

❧

जव तू खुदी को विल्कुल छोड़ देगा, खुदा को पा कर मालोमाल हो जायगा.

— शब्सतरी

❧

अहकार शैतान का प्रधान पाप है

— अज्ञात

❧

अहंकार ऐश्वर्य का नाश करता है

— अज्ञात

❧

अहंकारी अपनी मजिल पर नही पहुँच पाता क्योकि वह चाहता तो इज्जत और हरमत है मगर पाता है नफरत और तिरष्कार.

— वाकर

❧

मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहकार उतना ही वडा होता है.

— रोमा

नाश के पूर्व व्यक्ति अहकारी हो जाता है, किन्तु सम्मान सदैव व्यक्ति को नम्रता प्रदान करता है.

— बाईबिल

क्या तुम यह चाहते हो कि मनुष्य तुम्हें भला कहें तो तुम स्वयं को भला मत कहो.

— स्पैस्कल

मेरे लिए मुझसे अधिक बढ कर और कोई वस्तु नहीं है.

— स्टर्नर

प्रेमी एक दूसरे से क्यो नही ऊबते, इसका कारण है कि वे सदा अपने विषय में ही बातचीत करते है.

— अज्ञात

घमण्डी व्यक्ति दूसरो के घमण्ड को घृणा की दृष्टि से देखते है.

— फ्रैंकलिन

आत्मा

जो आत्मा है वही विज्ञाता है जो विज्ञाता है वही आत्मा है.

— आचाराग सूत्र

आत्मा ही अपने सुख-दुख का कर्ता तथा भोक्ता है. अच्छे मार्ग पर चलने वाला आत्मा अपना मित्र है, और बुरे मार्ग पर चलने वाला आत्मा शत्रु है.

— उत्तराध्ययन सूत्र

यह आत्मा अनादि, अविनाशी, विकारहीन, शास्वत, और सर्वव्यापी है.

— कृष्ण

जब आत्मा क्रोध में होता है तब अपना शत्रु होता है, जब क्षमा मे तब वह अपना मित्र.

— महावीर

आत्मा एक नदी है, इसमे पुण्य ही घाट है, सत्य रूप परमात्मा से ही यह निकली है, धैर्य ही इसके किनारे हैं, इसमे दया की लहरें उठती है, पुण्य कर्म करने वाला इस मे स्नान कर के पवित्र होता है.

— संत विदुर

आत्मा न कभी पैदा होती है, न मरती है, न कभी घटती-बढती है.

— भागवत

आत्मस्वरूप मे लगा हुआ चित्त बाह्य विषयो की इच्छा नही करता, जैसे कि दूध मे से निकला घी फिर दुग्ध भाव को प्राप्त नही होता.

— शंकराचार्य

आत्मा ज्ञानस्वरूप है। यह बात ज्ञानी ही जानता है.

— योगीन्द्र देव

समाधि किस की लगाऊं ? पूजूं किसे ? अछूत कह कर किसे अलग रहूं ? कलह किसके साथ करूं ? जहां भी देखता हू अपनी ही आत्मा दिखाई देती हैं.

— मुनि रामसिंह

❧

जब तुम बाहरी चीजो को पकड़ना और अपनाना चाहते हो, वे तुम्हें छल कर तुम्हारे हाथ से निकल भागती हैं, लेकिन जिस क्षण तुम उनकी तरफ पीठ फेर दोगे और प्रकाशो के प्रकाश स्वरूप अपनी आत्मा की ओर मुख करोगे, उसी क्षण परम् कल्याणकारक अवस्थाएं आपकी खोज में लग जाएगी, यही दैवी विधान है

— स्वामी रामतीर्थ

❧

आनन्द ही आत्मा का स्वरूप है.

— रमण महर्षि

❧

सब की आत्मा एक सरीखी है, सब की आत्मा की शक्ति समान है, मात्र कुछ की शक्ति प्रकट हो गई है, दूसरो की प्रकट होना बाकी है.

— म. गांधी

❧

हृदय भले ही टूट जाय, मगर आत्मा अचल रहे.

— नैपोलियन

❧

मैंने चमकीली आंखें, सुन्दर रूप, खूबसूरत शक्लें देखी, लेकिन एक आत्मा ऐसी न मिली जो मेरी आत्मा से बोलती.

— एमर्सन

दया दिखाना कुछ नही है—तेरी आत्मा दया से भरी होनी चाहिए, अमल मे पवित्रता कुछ नही है—तुझे हृदय से पवित्र होना चाहिए.

— रस्किन

आत्मा ही कामधेनु और नन्दन वन है. आत्मा ही अपना स्वर्ग और नरक है.

— महावीर

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रो को छोड़ कर, नवीन वस्त्रो को धारण कर लेता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को छोड कर नये शरीरो को प्राप्त कर लेता है.

— गीता

इस आत्मा को न तो शस्त्र काट सकते है, न इस को आग जला सकती है, न इसको जल गला सकता है, न वायु सुखा सकती है.

— गीता

जो वीर दुर्जय सग्राम मे लाखो योद्धाओ को जीतता है, यदि वह एक अपनी आत्मा को जीत ले, तो वह उस की सर्वोपरि विजय है.

— उत्तराध्ययन

आत्मा की प्राप्ति हमेशा सत्य से, तप से, सम्यग्ज्ञान से और ब्रह्मचर्य से होती है. निर्दोष लोग अपने अन्दर शुभ्र-ज्योतिर्मय आत्मा को देख सकते है.

— अज्ञात

आत्मा ही परमात्मा.

— महावीर

❀

जो एक आत्म-स्वरूप को जानता है, वह सब कुछ जानता है.

— महावीर

❀

शरीर नाव है, आत्मा नाविक है और ससार समुद्र है. इस ससार समुद्र को महर्षिजन पार करते है.

— महावीर

❀

ज्ञान, दर्शन और चरित्र से परिपूर्ण मेरी आत्मा ही शाश्वत है, सत्य सनातन है. आत्मा के सिवा अन्य सब पदार्थ सयोग-मात्र से मिले हैं.

— संथारा पइन्ना

❀

आत्मा की तुम्हें थाह नही मिल सकती, वह इतनी अगाध है.

— हेराक्लीटस

❀

समुद्रो से एक बडी चीज है—आकाश. आकाश से एक बड़ी चीज है—मनुष्य की आत्मा.

— विक्टर ह्यूगो

❀

आत्मा से वाहर मत भटको, अपने ही केन्द्र मे स्थित रहो.

— रामतीर्थ

आत्म-ज्ञान

जीवन में सब से मुश्किल बात अपने आप को जानना है.

— थेल्स

❀

जिसने अपने आप को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया.

— मुहम्मद

❀

समझ लो कि जिसने अपना पता लगा लिया उस के दु ख समाप्त हो गये.

— मैथ्यू आर्नोल्ड

❀

जिसने बुरा स्वभाव नही छोड़ा है, जिसने अपनी इन्द्रियो को नही रोका है, जिसका मन चचल बना हुआ है, वह केवल पढने-लिखने से आत्म-ज्ञान को नही पा सकता.

— कठोपनिषद्

❀

ससार का सुख और ससार की सहूलियतें रख कर जिसे आत्म-ज्ञान लेना है उसे आत्म-ज्ञान नही मिलेगा.

— अज्ञात

❀

इस जीवन-समुद्र में एक ही रत्न है—आत्म-ज्ञान.

— सूफी

न यहाँ कुछ है न वहाँ कुछ है. जहाँ जहाँ जाता हूँ न वहाँ कुछ है. विचार कर के देखता हूँ तो न जगत् ही कुछ है. अपनी आत्मा के ज्ञान से परे कुछ भी नही है.

– शंकराचार्य

आसक्ति

आसक्ति भय और चिन्ता की जड है.

– स्वामी रामतीर्थ

आसक्ति का राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएँ तुम्हारी पूजा करने लगेंगी.

– स्वामी रामतीर्थ

जब तक लोक और लौकिक पदार्थों मे आसक्ति रहेगी, तब तक ईश्वर मे सच्ची आसक्ति न हो सकेगी.

– जुन्नुन

यहाँ के सुन्दर, कोमल और कीमती कपडो और स्वादिष्ट भोजनो मे आसक्त रहने वाले को स्वर्गीय अन्न वस्त्र से वञ्चित रह जाना पड़ेगा.

– फ़ज़ल अपाज

आदमी जब कभी किसी दुनियावी चीज से दिल लगाता है, तभी उसको धोखा होता है. आप सासारिक पदार्थों मे आसक्ति रख कर सुख नही पा सकते—यही दैवी विधान है.

- रामतीर्थ

आनन्द

आनन्दमय जीवन बहुत शान्त होना चाहिए क्योकि शान्त वातावरण मे ही सच्चा आनन्द जी सकता है

– बरट्रैंड रसल

आनन्द बाहरी हालात पर नही, अन्दरूनी हालात पर निर्भर है.

– डेल कार्नेगी

जीवन है तो आनन्द है और परिश्रम है तो जीवन है.

– टॉलस्टाय

आसमान मे एक नया ग्रह ढूढ निकालने की अपेक्षा जमीन पर आनन्द का एक नया स्रोत खोज निकालना अधिक महत्त्वपूर्ण है.

– अज्ञात

आत्मा के आनन्द को काल की सीमाएँ नही होती, वह तो अनादि और अनन्त है.

– श्री अरविन्द

ज्ञान में आनन्द नही, प्रेम में आनन्द है.

— उड़िया बाबा

आनन्द के समान कोई सौन्दर्य प्रसाधन नही

— लेडी ब्लैसिंगटन

एक वहुत मीठा सा आनन्द भी होता है जो विषाद के भीतर से हम तक आता है.

— स्पर्जियन

दुनियावी चीजो में सुख की तलाश फिजूल है, आनन्द का खजाना तुम्हारे अन्दर है.

— रामतीर्थ

आदमी अपने आनन्द का नर्माता स्वय है.

— थोरो

आनन्द हर आदमी के अन्दर है और वह पूर्णता और सत्य की तलाश से मिलता है.

— गांधी

आधी दुनिया आनन्द-प्राप्ति के लिए गलत रास्ते पर दौड़ी जा रही है. लोग समझते है कि वह सग्रह करने और सेव्य वनने में है लेकिन है वह त्याग करने और सेवक वनने मे.

— हैनरी ड्रमन्ड

आशा

आशा ही वह मधुमक्षिका है जो बिना फूलो के शहद बनाती है.

— इंगरसोल

ॐ

आशा अमर है, परन्तु उसके बच्चे एक एक करके मरते जाते है.

— अज्ञात

ॐ

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती.

— गान्धी

ॐ

धन्य है वह, जो आशा नही रखता, क्योकि वह निराश नहीं होगा.

— स्विट

ॐ

आशा को जीवन का लंगर कहा है, उसका सहारा छोड़ने से आदमी भवसागर मे बह जाता है, पर बिना हाथ पैर हिलाये केवल आशा करने से ही काम नही सरता.

— लुक़मान

ॐ

अपनी आशाओ की मुर्गियो के पर कैच कर दो, वरना वे तुम्हें अपने पीछे भगा नचा कर परेशान कर डालेंगी.

— फ्रेंकलिन

आशा सदा हम से कहती रहती है—"बढे चलो, बढ़े चलो" और यूं हमे कब्र में ला पटकती है.

— मेडम डि मेन्टेनन

❀

आशा ही दु ख की जननी है, और निराशा (विरक्ति) ही परम् सुख-शान्ति देने वाली है.

— कृष्ण

❀

आशा ऐसा सितारा है जो रात को भी दिखता है और दिन को भी.

— एस. जी. मिल्स

आलोचना

आत्म-दोषो की आलोचना करने से पश्चात्ताप की भट्टी सुलगती है और उस पश्चात्ताप की भट्टी मे सब दोपो को जलाने के बाद साधक परम वीतराग भाव को प्राप्त करता है.

— भगवान महावीर

❀

सर्वोत्तम आलोचना वह है, जो बाहर से अनुभव कराने के बदले लोगो को वही अनुभव भीतर से करा देती है.

— स्वामी रामतीर्थ

दूसरो को बुरा बताने से हम खुद बुरे बन जाते है, क्योंकि हम अपने दोषो को दूर करने के बजाय उन्हें भूलने का प्रयत्न करते है.

— श्रीमन्नारायण

❖

सुख और शान्ति का कारण हमारे अन्दर ही है अगर हम अपने मन और हृदय को पवित्र कर सकें तो फिर तीर्थों में भटकने की जरूरत नही रहेगी.

— श्रीमन्नारायण

❖

दुनिया भर के पाप दूर हो सकते हैं, यदि उनके लिए सच्चे दिल से अफसोस करलें.

— मुहम्मद साहब

❖

जब तक आपने स्वय अपना कर्त्तव्य पूरा न कर दिया हो तब तक आपको दूसरो की कडी आलोचना नही करनी चाहिए

— डिमॉस्थनीज

❖

सब से पहले यह करो कि दोषान्वेषण और आलोचना की आदत छोड दो.

— प्रोफेसर ब्लेथी

❖

एक शेर को भी मक्खियों से अपनी रक्षा करनी पड़ती है.

— जर्मन लोकोक्ति

जब अपवाद उठाने वालो की जिह्वा आप को पीड़ा देने लगे, उस वक्त आप पीडा को ही सांत्वना मानें. याद रखिए, कुत्सित फूल पर भ्रमर कभी नही बैठते.

— गेटे

इच्छाएँ

इच्छाएँ अनन्त आकाश के समान हैं जैसे आकाश का अन्त नही वैसे ही इच्छाओ का भी अन्त नही.

— भगवान् महावीर

जो व्यक्ति इच्छाओ से मुक्त है, वह सदैव स्वतंत्र रहेगा.

— लेवू लेय

जो कुछ तुम इच्छा करते हो, वह पा नही सकते अतः जो कुछ तुम पा सको उसी की इच्छा करो.

— टेरेंस

जीवन के केवल दो स्थल ही दुखमय होते हैं—प्रथम तो इच्छाओ की पूर्ति हो जाना और द्वितीय इच्छाएँ अपूर्ण रहना.

— बर्नार्ड शॉ

बाद में उत्पन्न होने वाली सारी इच्छाओ की पूर्ति करने की अपेक्षा पहली इच्छा का दमन कर देना कही सरल और श्रेयष्कर है.

—फ्रैंकलिन

इच्छा पर विचार का शासन रहे

—इमर्सन

ईश्वर

हमे ईश्वर का सच्चा साक्षात्कार तभी होता है जब हम उसके सामने याचनाएँ नही किन्तु अपनी भेंट लेकर जाते है.

—टैगोर

ईश्वर उन्ही की सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करते है.

—अनाम

मैं पानी जैसी चीजो मे रस हूँ, सूरज और चांद की रोशनी हूँ, वेदो मे 'ॐ' हूँ, आकाश में आवाज हूँ, लोगो में उनकी हिम्मत हूँ, जमीन में खुशबू हूँ, आग मे उसकी दमक हूँ, तपस्वियो का तप हूँ और सब जानदारो की जान हूँ

—श्रीकृष्ण

उपकार

उपकार कभी व्यर्थ नही जाता.

— अज्ञात

❧

उपकार करने से मनुष्य की आत्मा उन्नत और प्रफुल्लित बनती है.

— गांधी

❧

परोपकार कर सको तो कोई बात नही, पर किसी का अपकार हरगिज न सोचो, न करो.

— गांधी

❧

जिसमें उपकार की वृत्ति नही, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नही है.

— अज्ञात

उदारता

किसी फकीर के पास अगर एक रोटी होती है, तो वह आधी आप खाता है, आधी किसी गरीब को दे देता है. लेकिन किसी बादशाह के पास एक मुल्क होता है तो वह एक मुल्क और चाहता है.

— सादी

ईश्वर प्रसन्न दाता से प्यार करता है.

— बाइबिल

❧

जो भाग्यशाली है वह उदार होता है और उदारता से ही आदमी भाग्यशाली बनता है.

— सादी

❧

उदार दे-दे कर अमीर बनता है, लोभी जोड़-जोड़ कर गरीब बनता है.

— जर्मन कहावत

❧

उदारता पापों को ऐसे बदल देती है जैसे पारस लोहे को बदल देता है.

— सादी

❧

उदार आदमी जब तक जीता है आनन्द से जीता है और तंग दिल वाला जिन्दगी भर दुखी रहता है.

— कैस-बिन इल खतीम

❧

दिलदार आदमी का वैभव गाँव के बीचो-बीच उगे हुए और फलों से लदे हुए वृक्ष के समान है.

— तिरुवल्लुवर

उत्साह

उत्साही प्रवृत्ति वाली स्त्री या पुरुष जिस किसी के भी संपर्क में आता है उस पर सदा चुम्बकीय प्रभाव डालता है.

— एच. अडिंगटन ब्रूस

न मैं कैलाश में रहता हूँ, न वैकुण्ठ में, मेरा वास तो भक्तों के हृदय में है.

— अज्ञात

आप ही प्याला है, आप ही कुम्हार है, आप ही प्यालो की मिट्टी है और आप ही उस प्याले से पीने वाला है, वह खुद आकर प्याला खरीदता है, खुद ही प्याले को तोड़ कर चल देता है.

— एक सूफी

आखिर ईश्वर क्या है ? एक शाश्वत बालक जो एक शाश्वत बाग में शाश्वत खेल खेल रहा है.

— अरविन्द

ईश्वर का दर्शन आंख से नहीं होता. ईश्वर के शरीर नही है. इसलिए उसका दर्शन श्रद्धा से ही होता है.

— गांधी

ईश्वर का टेलीफोन नम्बर निरहंकारता है.

— भक्त कोकिल साई

किसी ने एक संत को खंजर घुसेड़ दिया. सन्त बोला—तू भी भगवान है.

— रेनोल्ड नीबर

योगी लोग शिव को अपनी आत्मा के अन्दर देखते हैं, पत्थर या मिट्टी की मूर्तियों के अन्दर नहीं और जो लोग उस ईश्वर को अपने अन्दर नहीं देख पाते वे उसे तीर्थों में ढूंढते फिरते हैं.

— शिव पुराण

ऐ लोगो, तुम जो हज को जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारा माशूक यहीं मोजूद है, वापस आजाओ, तुम्हारा माशूक तुम्हारा पड़ोसी है. तुम्हारी दीवार से उसकी दीवार मिली हुई है. तुम जगल में सर खपाते हुए क्यो फिर रहे हो, क्यो फिर रहे हो ? तुम जो खुदा को ढूँढ़ रहे हो, ढूँढ़ते फिरते हो, ढूँढ़ने की जरूरत नही है, तुम खुद ही खुदा हो. जो चीज कभी गुम हुई ही नही उसे काहे के लिए ढूँढते हो ? तुम्हारे सिवाय कोई है ही नही, कहाँ जाते हो, कहाँ जाते हो ?

—शम्स तबरेजी

मैं ही शुरू हूँ, मैं ही आखिर हूँ, मेरे सिवाय कोई नही. मैं ही 'अलिफ' हूँ, मैं ही 'पे'. मैं वह रोशनी हूँ जो हर आदमी को रोशन करती है, मैं नही हूँ तो तुम कुछ नही कर सकते.

—इंजील

दृश्य ईश्वर क्या है ? गरीब की सेवा.

—गाधी

ईश्वर अपने बच्चो के नेत्रो को कभी कभी आँसुओ से धोता है ताकि वे उसकी प्रकृति और आदेशो को सही-सही पढ़ सकें.

—काइलर

एक सत्य स्वरूप परमेश्वर को विज्ञान अनेक नामो से पुकारते है

—ऋग्वेद

किसी आदत को खिड़की मे से बाहर नही फेंका जा सकता. फुसला कर सीढ़ियो के नीचे एक-एक पैड़ी उतारा जा सकता है.

— मार्क ट्वेन

❑

जो व्यक्ति अपनी विफलता से डरता है वह अपने कर्म क्षेत्र को सीमित कर लेता है. विफलता एक सुयोग मात्र है—अधिक सोच-समझ कर दुबारा आरभ करने का.

— हेनरी फोर्ड

❑

अन्धे उत्साह से नुकसान ही नुकसान है.

— मैगनस गोट फ्रीड

❑

उत्साह प्रेम का फल है. जिस मे सच्चा प्रभु-प्रेम होता है वही उस के दर्शन के लिए उत्सुक रहता है.

— अबु उस्मान

❑

उत्साह अत्यन्त बलवान है, उत्साह सरीखा दूसरा बल नही, उत्साही पुरुष को लोक मे कुछ भी दुर्लभ नही.

— रामायण

❑

आर्य ! उत्साह में बड़ा बल होता है, उत्साह से बढ़ कर दूसरा बल नही है, ससार मे उत्साह-सम्पन्न मनुष्य के लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नही.

— वाल्मीकि रामायण

द्वितीय अध्याय

— क

- कला
- कलाकार
- काम
- क्रोध
- गरीबी

कला

जो कला आत्मा को आत्मदर्शन करने की शिक्षा नहीं देती वह कला ही नहीं है.

— गांधी

कला कला के लिए नहीं है, मानव जाति की सेवा के लिए है.

— मूसर्गस्की

सब से बड़ा काम जो कला कर सकती है वह यह है कि वह हमारे सामने शरीफ़ इन्सान की तस्वीर पेश करे।

— रस्किन

उत्तम जीवन की भूमिका के बिना कला किस प्रकार चित्रित की जा सकती है ?

— गांधी

मैं कला को कलाकार की विकसित आत्मा का प्रतिबिम्ब मानता हूँ और सुसृष्टि के लिए महात्मा होना आवश्यक समझता हूँ.

— उग्र

कला तो सत्य का केवल शृंगार है.

— हरिभाऊ उपाध्याय

कला मुझे उसी अंश तक स्वीकार्य है जिस अंश तक वह कल्याणकारी एवं मंगलकारी है.

— गांधी

कला का मिशन प्रकृति का प्रतिनिधित्व करना है, न कि उसकी नकल.

— अज्ञात

कला का अन्तिम और सर्वोच्च ध्येय सौन्दर्य है.

— गेटे

कला प्रकृति की नकल नही करती, बल्कि प्रकृति के अध्ययन को अपना आधार बनाती है—वह प्रकृति मे से चुन चुन कर वे चीजें लेती है जो कि उसकी अपनी मंशा के अनुकूल हो और तब उनको वह बख्शती है जो कि प्रकृति के पास नही है, यानी—आदमी का मन और आत्मा.

— बलवर

जीवन ही कला है.

— गाधी

कला जीवन की दासी है और उसका काम यही है कि वह जीवन की सेवा करे.

— गांधी

कला वही है जो नयनाभिराम और कर्ण-तृप्ति ही न दे, बल्कि आत्मा को भी ऊपर उठाए.

— गांधी

हिन्दुस्तान की कला में कल्पना भरी हुई है, यूरोप की कला में प्रकृति का अनुकरण है.

— गांधी

कला, कला के लिए कहना व्यर्थ है—कला तो जीवन के लिए (उपयोगी) होनी चाहिए.

— गाधी

कलाकार

सब से महान् कलाकार वह है जो अपने को ही कला का विषय बनाये.

— सत्यभक्त

✿

जीवन समस्त कलाओ से श्रेष्ठ है. जो अच्छी तरह जीना जानता है, वही सच्चा कलाकार है.

— गांधी

✿

सच्चा कलाकार अपनी पत्नी को भूखो मरने देगा, बच्चो को नगे पैर घूमने देगा और अपनी माँ को सत्तर साल की उम्र में अपनी जीविका के लिए मारे-मारे फिरने को छोड़ देगा, लेकिन वह कला की आराधना के अलावा कोई काम नही करेगा.

— बर्नार्ड शॉ

✿

कलाकार बनने के लिए मुख्य शर्त है मानव मात्र के प्रति प्रेम, न कि कला-प्रेम.

— टॉलस्टाय

जीवन समस्त कलाओ मे श्रेष्ठ है. मैं तो समझता हूं कि जो अच्छी तरह से जीना जानता है वही सच्चा कलाकार है.

—अज्ञात

अच्छी तरह जीना जानता है वही सच्चा कलाकार है.

—गांधी

काम

काम से शोक उत्पन्न होता है.

—धम्मपद

काम्य कर्म बन्धनकारी होते हैं, मोक्ष चाहने वालो को कभी विनोद मे भी उन कर्मों का आचरण नही करना चाहिए.

—ज्ञानेश्वरी

अर्थातुरो को न कोई गुरु होता है न बन्धु, कामातुरो को न भय होता है न लज्जा, विद्यातुरो को न सुख होता है न नीद, क्षुधातुरो को न स्वाद होता है न समय.

—संस्कृत सूक्ति

एक कामना पूर्ण होती है तो दूसरी पैदा होकर बाण की तरह छेदने लगती है भोगेच्छा भोगों से कभी शान्त नही होती, बल्कि यो भड़कती

है जैसे घी डालने से आग. भोगो की अभिलाषा रखने वाला मोही पुरुष सुख नही पाता.

— महर्षि विश्वामित्र

❀

जिसने अपनी कामनाओ का दमन करके मन को जीत लिया और शान्ति पाई तो चाहे वह राजा हो या रक उसे ससार मे सुख ही सुख है.

— हितोपदेश

❀

काम से जो पुरुष आर्त्त है वह जीव और जड में भेद नही कर सकता है

— कालिदास

❀

काम एक बीज है जो जन्मो की फसल पैदा करता है.

— अज्ञात

❀

जिस समय आदमी तमाम काम और कामनाओ का परित्याग कर देता है उसी समय वह भगवत्स्वरूप को प्राप्त कर लेता है.

— भक्त प्रह्लाद

क्रोध

शान्ति से क्रोध को, नम्रता से मान को, सरलता से माया को एवं सतोष से लोभ को जीतना चाहिये.

— महावीर

क्रोध प्रीति का नाश करता है.

— उत्तराध्ययन सूत्र

❀

क्रोध अहिंसा का शत्रु है, और अहकार तो ऐसा राक्षस है जो उसे समूचा निगल जाता है.

— गांधी

❀

सज्जन का क्रोध क्षण भर रहता है, साधारण आदमी का दो घण्टे, नीच आदमी का एक दिन व एक रात, और महापापी का मरते दम तक.

— अज्ञात

❀

क्रोध तो मूर्खों को होता है, ज्ञानिय को नही.

— महर्षि पराशर

❀

जो क्रोध करता है वह हिंसा का अपराधी है.

— गांधी

❀

बलवान को जल्दी क्रोध नही आता.

— अज्ञात

❀

क्रोध समुद्र की तरह बहरा और आग की तरह उतावला है

— शेक्सपियर

❀

जिस तरह खौलते पानी मे अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नही दे सकता, उसी तरह क्रोधाभिभूत मनुष्य यह नही समझ सकता कि उसका आत्महित किसमे है.

— बुद्ध

अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है किन्तु क्रोधाग्नि तो सारे कुटुम्ब को जला डालती है.

— तिरुवल्लुवर

ॐ

क्रोध हसी की हत्या करता है और खुशी को नष्ट कर देता है.

— तिरुवल्लुवर

ॐ

जिस समय तुम्हें क्रोध आये उस समय एक ग्लास भर के पानी पीलो। उवलता क्रोध शान्त हो जायगा.

— अज्ञात

ॐ

इस बात पर गुस्सा न होओ कि तुम दूसरो को वैसा नही वना सकते जैसा तुम चाहते हो, क्यों कि तुम स्वयं अपने को भी वैसा नही पाते जैसा तुम बनना चाहते हो.

— थॉमस कैम्पी

ॐ

जितने मिनट आप क्रुद्ध रहते है, प्रत्येक मिनट मे आप सुख के साठ सेकण्ड खोते है.

— राल्फ वाल्डो इमर्सन

ॐ

क्रोध पर प्रेम से, पाप पर पुण्य से, लोभ पर दान-शीलता से और झूठ पर सत्य से विजय प्राप्त करो.

— वुद्ध

ॐ

क्रोध वलवान का लक्षण नही, वरन् एक बिगडे हुए वच्चे या दुर्वलता की निशानी है.

— अज्ञात

हम कीड़े-मकोड़े और रेंगने वाले जन्तुओं को तो मार डालते हैं पर अपने सीने में छिपे हुए क्रोध को नहीं मारते, जो सच-मुच मारने की चीज है.

— गांधी

क्रोध का सब से अच्छा इलाज चुप है.

— गांधी

क्रोधहीन मनुष्य देवता है.

— गांधी

क्रोध एक तरह का रोग है जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते है.

— गांधी

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चात्ताप पर खत्म होता है.

— पियागोरस

क्रोध समझदारी को घर से बाहर निकाल देता है और दरवाजे की चटखनी लगा देता है.

— प्लुटार्च

क्रोध मस्तिष्क के दीप को बुझा देता है. अत. किसी महत्त्वपूर्ण परीक्षा मे हमे सदैव शान्त व स्थिर होना चाहिए.

— इंजरसोल

क्रोध एक क्षणिक पागलपन है इसे वश मे करो नही तो यह तुम्हें वश में कर लेगा.

—होरेस

❖

क्रोधी व्यक्ति का मुख खुला रहता है किन्तु नेत्र बन्द रहते है.

—कैटो

❖

सज्जनो का क्रोध जल पर अंकित रेखा के समान है जो शीघ्र ही विलुप्त हो जाती है.

—रामकृष्ण परमहस

❖

क्रोध तो बरैया के छत्ते में पत्थर फेंकने के समान है.

—मातावार लोकोक्ति

❖

आत्मा को पतनोन्मुख बनाने वाले तीन ही मार्ग है—कामातुरता, क्रोध और मोह, अतः तीनों ही त्याज्य हैं.

—गीता

❖

जो क्रोध पर उचित नियन्त्रण कर सकते हैं वे ही स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं.

—कुरान

❖

संपूर्ण ससार को एकता के सूत्र मे बाधने की योजनाएँ बनाना सरल है किन्तु अपने हृदय मे रहने वाले क्रोध पर विजय पाना अत्यन्त कठिन है.

—आचार्य विनोबा

जिस समय क्रोध उत्पन्न होने वाला हो उस समय उसके परिणामों पर विचार करो.

— कन्फ्यूशियस

❧

स्मरण रखिए कि आप क्रोध की दशा में ही अत्यन्त निर्बल एवं क्षीण काय रहते हैं. कारण यही है कि क्रोध का अस्त्र स्वयं चालक को ही घायल करता है.

— आरोग्य से

गरीबी

मैंने गरीबी के समान अन्य कोई वस्तु युवक के लिए अधिक दुखदायी नही देखी.

— अबू नश नाश

❧

गरीबी और मौत मे मुझे मौत पसन्द है. मरने की तकलीफ थोडी है, दरिद्रता का दुःख अनन्त है.

— अज्ञात

❧

गरीबी की शर्म उतनी ही बुरी है, जितना धन का अहंकार.

— अंग्रेजी कहावत

❧

गरीबी ऐसा बडा पाप है और इसने अधिक प्रलोभन और दुःख से ओत-प्रोत है, कि मैं दिलोजान से चाहूँगा कि तुम इससे बच कर रहो.

— डाक्टर जॉन्सन

जो अपने लिए मागने का दरवाजा खोलता है, खुदा उसके लिए गरीवी का दरवाजा खोल देगा.

— मुहम्मद

गरीवी अपने को गरीव मानने मे है.

— एमर्सन

गरीवी तभी दूर होगी जव भारत के जन जन के हृदय से आलस्य की भावना दूर भाग जायगी.

— गांधी

भारत की दरिद्रता मुख्यतः उसके आलस्य का परिणाम है.

— गांधी

गरीवी मे पड़ कर भी जो सत्य से न डिगे वही सत्पुरुप है.

— गाधी

तृतीय अध्याय

—च

- चरित्र
- चारित्र
- जगत्
- जन्म
- जीवन
- झूठ

चरित्र

चरित्र ही सफलता अथवा असफलता का द्योतक है. चरित्र सफल है तो जीवन भी सफलता की ओर बढेगा किन्तु चरित्र असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य पतनोन्मुख होगा.

— रोमो

चरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान सुगन्धित शव के समान है.

— बारटल

चरित्र एक ऐसा हीरा है जो सभी पाषाण-खडो को काट देता है.

— बारटल

यदि मैं अपने चरित्र की परवाह करूंगा तो मेरी कीर्ति स्वय अपनी परवाह करेगी.

— डी. एल. मूडी

चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है, वह मित्र उत्पन्न करता है, सहायता और सरक्षक प्राप्त कराता है, और धन तथा सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है.

— जे. हावेज

हम जिस चरित्र का निर्माण करते हैं, वह हमारे साथ भविष्य मे भी रहेगा जब तक कि हम ईश्वर का साक्षात्कार कर उस मे लीन नही हो जाते.

— डॉ. राधाकृष्णन

धनी-निर्धन दोनो ही चरित्र के अधिकारी है, समाज के लिए दोनो से सुन्दर चरित्र की अपेक्षा है. किन्तु धनी धन के घमण्ड में उसे खो बैठता है और निर्धन उसे ही अपना सर्वस्व समझ कर संजोए रहता है.

— स्वेट मार्टेन

❀

जो कुछ हमने अपने चरित्र से संचित किया है, वही हम अपने साथ ले जाएंगे ।

— हेम्बोल्ट

❀

उत्तम व्यक्ति शब्दो मे सुस्त और चरित्र मे चुस्त होता है.

— कन्फ्यूशियस

❀

चरित्र मनुष्य के अन्दर रहता है, यश उसके बाहर.

— एमर्सन

❀

चरित्रहीन की मानसिक यन्त्रणायें नरक की यंत्रणाओ से भी बढ कर हैं.

— मेरी करेली

चारित्र

विना चारित्र के ज्ञान शीशे की आँख की तरह है, सिर्फ दिखलाने के लिए, और एकदम उपयोगिता-रहित.

— स्विनॉक

मैं अपने कैम्प में चारित्रहीन मनुष्य की अपेक्षा चेचक, पीला बुखार, हैजा और ताऊन का आना ज्यादा पसन्द करूँगा.

— ब्राउन

दुर्बल चारित्र वाला उस सरकडे की तरह है जो हवा के हर झोके पर झुक जाता है.

— माघ

जीवन का लक्ष्य सुख नही, चारित्र है.

— बीचर

ईसा सौ बार पैदा हो इससे क्या होता है, जब तक वह तुम्हारे अन्दर पैदा नही हुआ.

— ऐंजेल्स सिलोसियस

जैसे बर्ताव की तुम लोगो से अपने प्रति अपेक्षा रखते हो, वैसा ही बर्ताव तुम उनके प्रति भी रखो.

— बाइबिल

दुनिया मे आदमी से बड़ा कोई नही है और आदमी मे चारित्र से बढ़ कर कुछ नही है.

— इवार्टस

चारित्र की कसौटी है—आत्म-त्याग.

— अज्ञात

यश वह है जो कि लोग लुगाइयां हमारे विषय में सोचते हैं, चारित्र वह है जो ईश्वर और देव हमारे विषय मे जानते है.

— पेन

मनुष्य को कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे वह अपने आपको छोटा और हीन समझने लगे.

— डॉ. गणेशप्रसाद

चारित्र ही धर्म है.

— जैनाचार्य

अगर आप सोचते है कि अपनी किताबो पर उधर बैठे रह कर वीरता का निर्माण कर देंगे, तो यह वह मूढतम कल्पना है जो नवयुवको को फुसला कर उनका सर्वनाश किया करती है. आप सपने देख-देख कर चारित्रवान् नही बन सकते। अपने चारित्र का निर्माण आप को गढ-गढ कर और ढाल-ढाल कर करना होगा.

— फ्रॉड

जगत्

जगत् हमसे भिन्न नही है, हम जगत् से भिन्न नही है, सब एक दूसरे में ओत-प्रोत पडे हैं और एक दूसरे के कार्य का असर एक दूसरे पर होता रहता है यहाँ विचार भी कार्य है—यानी एक भी विचार मिथ्या नह जाता. इसलिए हमेशा अच्छे विचार ही करने चाहिएं.

— गाधी

इस जगत् मे कोई सम्बन्ध नित्य नही है. अपनी देह का भी नही है, तब स्त्री-पुत्रादि का साथ भी सदा नहीं रहेगा, यह क्या कहने की जरूरत है ?

— कृष्ण

ॐ

जगत् मे जो कुछ है वह भगवान् का प्रकाश है.

— अरविन्द घोष

ॐ

जो ज्ञानी को जगत् रूप मे दिखता है, वही ज्ञानी को भगवान् रूप दिखता है.

— ज्ञान गगा से

ॐ

अन्तरंग जितना उज्ज्वल होगा जगत् उतना ही मंगल होगा. आन्तरिक आत्माराम का दर्शन होगा तो बाहर भी राम-रूप भरा हुआ, बल्कि छलकता हुआ दिखलाई देगा.

— ज्ञानेश्वरी

ॐ

विचार के सिवाय जगत् और कोई चीज नही है.

— रमण महर्षि

ॐ

जैसे नीद मे सपना दिखता है, जागने पर दूर हो जाता है, वैसे ही अज्ञान से जगत् पैदा होता है और सम्यक्ज्ञान से गायब हो जाता है.

— योग वाशिष्ठ

ॐ

यह जगत् काटो की बाढी है, देख देख कर पैर रखना.

— गोरख

जन्म

हमारा मानव अवतार इसलिए हुआ है कि हमारे अन्तर मे जो ईश्वर वसता है उसका साक्षात्कार हम कर सकें.

— गाधी

यहाँ सदा तो रहना नही है, बीसो विसवे जाना है जरा-से सुहाग के लिए क्या शीस गुथाऊँ.

— सहजो

आदमी के पैदा होते समय माँ-बाप जो तकलीफ सहते हैं, उसका बदला सौ वर्षों मे भी नही चुकाया जा सकता.

— मनु

प्रत्येक प्राणी का जन्म दो बार होना है एक तो वह जिस रूप में माता के गर्भ से उत्पन्न होता है और दूसरा वह जब सस्कारित होता है.

— अज्ञात

मनुष्य झुकने के लिए नही, वरन् सिर उठा कर आत्म-सम्मान से आगे बढ़ने के लिए उत्पन्न हुआ है. किसी के अनुचित दबाव को आश्रय न दो, अन्याय को मत सहन करो. सत्य की रक्षा के लिए यदि आवश्यकता पड़े तो प्राण न दे दो.

— गाधी

जीवन

जीवन कर्म का दूसरा नाम है. वह जो कि कर्म नही करता उसका अस्तित्त्व है किन्तु वह जीवित नही है.

— हिलार्ड

हम इस प्रकार जीवन व्यतीत करें कि हमारे मरने पर हमे दफनाने वाले भी दो आँसू बहा दें.

— पेट्रार्क

प्रत्येक मनुष्य इस ससार के रगमच पर एक अभिनय करने आता है. अपनी मन-प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ से दुहराता है—यही मनुष्य का जीवन है.

— भगवतीचरण वर्मा

भूतो के साथ सग्राम करना ही जीवन है.

— गाधी

आप जैसा चाहें वैसा अपना जीवन बना सकते है, यदि आप दृढता के साथ अपनी भीतरी वृत्तियो को ठीक करें.

— जेम्स एलन

इस बात का कोई महत्त्व नही कि मनुष्य मरता किस प्रकार है, अपितु महत्त्व की बात तो यह है कि वह जीवित किस प्रकार रहता है.

— हजरत अली

वे इसलिए जीवित है कि खा सके किन्तु वह (सुकरात) इसलिए खाता है कि जीवित रह सके.

— एथीनियस

हम आते है और रोते हैं, यही जीवन है; हम जभाई लेते हैं और चल बसते हैं, यही मृत्यु है.

— अज्ञात

जीवन सब कलाओ से ऊपर है, और मैं यह भी घोषित करता हूँ कि जो व्यक्ति जीवन में पूर्णता लाने का प्रयास करता है, वह एक महान् कलाकार है.

— गाधी

जीवन की तन्त्री को इतनी ढीली न छोड़ो कि स्वर ही न निकले और न इतनी कसो कि तार ही टूट जाय.

— अज्ञात

मैं एक ही बार मे इस ससार से होकर गुजर जाना चाहता हूँ अतः कुछ भी अच्छाई मुझे करनी है अथवा अपने साथियो के साथ जो दया-पूर्ण व्यवहार करना है, मैं वह अभी कर डालना चाहता हूँ. क्योकि मैं फिर इस ससार मे से होकर नही गुजरूँगा.

— अनाम

उत्पन्न होना एक मुसीबत है; जीवित रहना कष्ट और मृत्यु को प्राप्त होना एक परेशानी.

— सन्त बर्नार्ड

जब तक शरीर मे प्राण है तब तक किसी को भी निराश नही होना चाहिये.

— इरासम

❀

वही सच्चा जीवन व्यतीत करता है जो अपनी जीवन शक्ति भावी सन्तान के लिए व्यय कर देता है.

— स्टिफेन ज्विग

❀

मनुष्य के जीवन की तीन बड़ी घटनाए विवाद से पूर्णतः परे होती है— प्रथम जन्म, द्वितीय विवाह और तृतीय मृत्यु.

— आस्टिन

❀

मैं अत्यन्त सरलता से जीवन-यापन की शिक्षा नही देना चाहता अपितु मैं एक कठिन श्रमशील जीवन की शिक्षा देना चाहता हूँ.

— रूजवेल्ट

❀

अगर तुम्हारे पास दो पैसे हो तो एक से रोटी खरीदो, दूसरे से फूल; रोटी तुम्हे जिन्दगी देगी और फूल तुम्हे जीने की कला सिखायेगा.

— अज्ञात

❀

जीवन-पुष्प प्रभु के चरणो में अर्पण करने के लिए है.

— स्वामी रामदास

❀

सादा खाना खाओ, शुद्ध जल पीओ, ऐश्वर्यशाली होओ, विश्व-दानी बनो.

— अथर्ववेद

हम देने से पाते है. क्षमा देने से क्षमा पाते है, जान देने से अमर जीवन पाते है.

— सन्त फ्रासिस ऑफ असीसी

❧

जिस प्रकार विना तेल के दीपक नहीं जल सकता, उसी प्रकार विना ईश्वर के मनुष्य अच्छी तरह नही जी सकता.

— रामकृष्ण परमहंस

❧

आठ महिने खूब मेहनत करो जिससे वरसात में सुख से खा सको; दिन भर मेहनत करो कि रात को सुख की नीद सो सको; जवानी मे वुढ़ापे के लिए सग्रह करो और इस जन्म मे परलोक के लिए कमाई करो.

— अज्ञात

❧

जहाँ प्रेम है वहाँ जीवन है, जहाँ घृणा है वहाँ विनाश है.

— गाधी

❧

अच्छी चीजो मे सब से अच्छी चीज है—शान्त जीवन.

— जॉन रे

❧

ज्ञानियो को तभी तक जीवित रहना चाहिए, जब तक उन्हें अपयश का कलंक न लगे.

— ज्ञानेश्वरी

❧

जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्रा देने पर भी नही मिल सकता.

— चाणक्य नीति

प्रेम के बगैर ज़िन्दगी मौत है.

— गाथा

सारा दिन सितार में तार लगाते-लगाते ही बीत गया, लेकिन अभी तक तार नहीं लग पाये और न संगीत ही शुरू हुआ.

— टैगोर

जीवन मे खलबली न हो तो वह बड़ी नीरस चीज हो जाय. इसलिए जीवन की विषमताएँ सह लेने में ही होशियारी है.

— गांधी

जैसा जीवन बिताने की इच्छा हो वैसा जीवन बिताने की ससार मे गुञ्जाइश है.

— केदारनाथ

जो अच्छी तरह जीता है, वह दो बार जीता है

— लैटिन कहावत

हम आज है, कल नही रहेंगे.

— अज्ञात

जीवन प्रेम है.

— गेटे

कुशा की नोक पर स्थित ओस की बूद की तरह मानव जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए हे गौतम ! क्षण मात्र का भी प्रमाद न कर.

— भ. महावीर

हम सब किसी को प्रसन्न करने की आशा से जीते हैं.

— जॉन्सन

❧

निश्चय करने वाला दिल, योजना बनाने वाला मन और अमल करने वाला हाथ

— गिबन

❧

खुद मर कर औरो को जीवित रहने देने की तैयारी में ही मनुष्य की विशेषता है.

— गांधी

❧

बहुत से लोग ऐसे हैं जो मर गये मगर उनके गुण नहीं मरे, और बहुत से लोग ऐसे है जो जीवित है किन्तु सर्वसाधारण की दृष्टि मे मृतक है.

— अज्ञात

❧

जीवन तो नदी की धारा के समान है, प्रवाह रुकते ही उसकी मिठास जाती रहती है; उसका अस्तित्त्व ही मिट जाता है.

— अज्ञात

❧

जीवन जागने के लिए है और इसके समान जीवन में कोई आनन्द नही है सम्पत्ति और वैभव मनुष्य को सुख देंगे, यह भ्रम है. सौन्दर्य और आनन्द से ही सुख है. वास्तविक सौन्दर्य शान्त प्रकृति, पवित्र आचार और पवित्र विचार मे है. ये बातें जिस मनुष्य मे है वही सुख का भोक्ता है इस गुण को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अहर्निश संघर्ष करना चाहिए, यही जीवन है.

— प्लेटो

वह सब से अधिक जीता है जो सब से अधिक सोचता है, उत्कृष्टतम भावनाएँ रखता है, सर्वोत्तम रीति से कार्य करता है.

— वेली

जीना मानी मौज नही—खाना पीना कूदना नही—बल्कि ईश्वर की स्तुति करना अर्थात् मानव जाति की सच्ची सेवा करना है.

— गांधी

पहले ईश्वर को प्राप्त करो, और तब धन प्राप्त रको. इससे उल्टा करने की कोशिश न करो. अगर आध्यात्मिकता प्राप्त करने के बाद तुम सासारिक जीवन बसर करोगे तो तुम मन की शान्ति को कभी नही खोओगे.

— रामकृष्ण परमहंस

झूठ

थोडा-सा-झूठ भी मनुष्य का नाश करता है, जैसे दूध को एक बूंद जहर.

—गाधी

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठ से नहीं बचते, भले वह शर्म या डर के मारे क्यो न हो ? क्या यह अच्छा नही होगा कि हम मौन ही धारण करें या आपस में निडर हो कर जैसा हमारे दिल मे है वैसा ही कहें.

— गाधी

जितनी कमजोरी उतना झूठ. शक्ति सीधी जाती है. दुर्बल तो झूठ बोलेंगे ही.

— रिटचर

❂

एक झूठ पर दूसरे झूठ का छप्पर रखना चाहिए, क्योंकि वह चूने लगता है.

— ओवैन

❂

असत्य विजयी भी हो जाय, तो भी उसकी विजय अल्पकालिक होती है.

— ल्योनार्ड

❂

भयकर झूठ वह नहीं जिसे बोला जाता है बल्कि वह जिस पर जिया जाता है.

— क्लार्क

❂

झूठ शब्दों में निहित नहीं है, छल करने में है. चुप्पी साध कर भी झूठ बोला जा सकता है. जूमानी लफ्ज कह कर, किसी शब्द पर जोर देकर, आँख के इशारे से और किसी वाक्य को विशेष महत्त्व देकर भी झूठ का प्रयोग होता है. सचमुच इस तरह का झूठ साफ लफ्जों मे बोले गये झूठ से कई गुना बुरा है.

— रस्किन

❂

किसी ने अरस्तू से पूछा—"आदमी झूठ बोल कर क्या पाता है?" "यह कि जब वह सच बोलता है तो उसका कभी विश्वास नहीं किया जाता", उसने जबाव दिया.

— अज्ञात

झूठ की सब से बड़ी कमजोरी यह है कि उसे आज की बात कल याद नही रहती.

— रसेल

ॐ

झूठ बोलने का परिणाम यही है कि सच बोलने पर भी विश्वास नही किया जाएगा.

— सर डब्लू. रैले

चतुर्थ अध्याय

–त

- तप
- तृष्णा
- त्याग
- दर्शन
- दया
- दान
- दु:ख
- दोष
- धर्म
- धन
- धैर्य
- नम्रता
- नरक
- नारी

तप

तपो में ब्रह्मचर्य तप उत्कृष्ट है.

— भ. महावीर

❧

शुद्ध तपश्चर्या के बल से अकेला एक आदमी भी सारे जगत् को कँपा सकता है, मगर इसके लिए अटूट श्रद्धा की आवश्यकता है.

— गांधी

❧

प्राचीन काल में तप का बड़ा महत्त्व था. आज लोग तप के अभाव में ही जीवन-पथ से भटक जाते हैं.

— गांधी

❧

तपस्या जीवन की सब से बड़ी कला है.

— गांधी

❧

स्वाध्याय के बराबर तप नहीं है.

— अज्ञात

❧

जिसने तप किया वह परमेश्वर हो गया.

— उपासनी

❧

अपनी जान की चिराग को तू तपस्या से रोशन कर, ताकि खुशकिस्मत आदमियो की तरह तू भी खुशकिस्मत हो.

— सादी

मन को प्रसन्न रखना, शान्त भाव; कम वोलना, आत्म-सयम और भावो की पवित्रता—यह मन का तप है.

— गीता

ॐ

जब तक मन में दुर्ध्यान प्रवृत्त नहीं होता तब तक साधक को तप का आचरण करना चाहिए.

— जैनाचार्य

ॐ

देवता, शिष्ट मनुष्य, गुरु और ज्ञानी जनो का सम्मान, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा—यह शरीर का तप है.

— गीता

ॐ

दूसरो को उद्विग्न न करने वाले सत्य, प्रिय और हित वाक्य को कहना और आत्मा को ऊँचा उठाने वाले ग्रंथो का स्वाध्याय करना—यह वाणी का तप है.

— गीता

तृष्णा

कैलाश के समान चाँदी और सोने के असख्य पर्वत भी यदि पास में हो तो भी तृष्णाशील व्यक्ति की तृप्ति के लिए वे न-कुछ के बराबर हैं. कारण, तृष्णा आकाश के समान अनन्त है.

— भ. महावीर

ज्यो-ज्यो लाभ होता है, त्यो-त्यो लोभ भी बढ़ता जाता है. देखिए, पहले केवल दो माशे सुवर्ण की इच्छा थी, पर बाद में वह तृष्णा करोड़ो पर भी पूरी न हो सकी.

– भ महावीर

तृष्णा एक भयकर लता है, जिसके फल भी बडे भयकर है.

– उत्तराध्ययन सूत्र

तृष्णा का प्याला पी कर आदमी अविचारी और पागल हो जाता है

– सादी

तृष्णा की आग सन्तोष के रस को जला डालती हैं.

– योगवाशिष्ठ

सर्प के द्वारा आधा निगल लिये जाने पर भी मेढक मक्खियो को खाता रहता है, उसी प्रकार तृष्णान्ध पुरुष अवस्था के ढल जाने पर भी विषय-सेवन करता रहता है.

– शकराचार्य

जैसे कुत्ते मुर्दे को खाते है, वैसे तृष्णा अज्ञानी को खाती रहती है.

– योगवाशिष्ठ

तृष्णा को उखाड़ फेंकने वाले का पुनर्जन्म नही.

– बुद्ध

जिसने तृष्णा जीत ली, उसने अटल स्वर्ग जीत लिया.

– महाभारत

जो कर्तव्य-कर्म समझ लेता है और उसके अनुसार आचरण करता है, उसकी तृष्णा नष्ट-सी हो जाती है. जिसकी तृष्णा मरी नहीं उसे अपने कर्तव्य-कर्म का ध्यान ही नहीं रहता...तृष्णा के त्याग का अर्थ ही है—कर्तव्य-ध्यान.

— गांधी

त्याग

त्याग एक सात्त्विक आनन्द है.

— गांधी

भोग से आत्मा का शोषण होता है, त्याग से आत्मा को पोषण मिलता है.

— विनोबा

साप केंचुली को त्याग देता है, पर विष को नहीं त्यागता; ऐसे ही मनुष्य मुनि-वेश तो धारण कर लेता है, लेकिन भोग-भावना को नहीं छोड़ता.

— मुनि रामसिंह

अपनी रोटी समुद्र मे डाल दे, एक रोज वह तेरे लिए तैर आएगी.

— बाइबिल

आभ्यन्तरिक अभिलाषाएँ त्याग दो और आत्मानन्द मे मस्त रहो, फिर चाहे महलो मे रहो या झोपड़ी में

— स्वामी रामदास

सब कामनाओ को पाने वाला और उनको त्यागने वाला ही श्रेष्ठ है.

— शुकदेव मुनि

❧

इस दुनिया मे हम जो लेते है वह नही, बल्कि जो देते हैं वह हमे धनवान बनाता है.

— बीचर

❧

कोई भी त्याग बदले की भावना से नही करना चाहिए.

— गाधी

❧

त्याग के बिना मनुष्य का विकास नही हो सकता.

— गांधी

जबरदस्ती से कराया गया त्याग स्थायी नही होता.

— गाधी

❧

त्याग यह नही है कि मोटे और सख्त कपडे पहिन लिये जाय और सूखी रोटी खायी जाय. त्याग तो यह है कि अपनी आरज़ू, इच्छा और ख्वाहिश को जीता जाय.

— सूफ़ियान सौरी

❧

जो अपने आराम, अपने खून, अपनी दौलत का कुछ हिस्सा दूसरो के भले के लिए नही देता वह एक कँगला, कठोर कमीना है.

— जोना बेली

❧

जिस त्याग से अभिमान उत्पन्न होता है, वह त्याग नही है त्याग से शान्ति मिलनी चाहिए. आखिर अभिमान का त्याग ही सच्चा त्याग है.

— विनोबा

जिसने इच्छा का त्याग किया, उसे घर छोड़ने की क्या आवश्यकता और जो इच्छा का दास है उसको वन मे रहने से क्या लाभ हो सकता है ? सच्चा त्यागी जहाँ रहे वही वन है और वही भजन-कंदरा है.

— महाभारत

ः

त्याग के विना देश-भक्ति नही हो सकती, क्योकि जहाँ स्वार्थ या ग्रहण की भावना आई, वह मनुष्य ऊपर चढ ही नहीं सकता.

— गांधी

ः

जिसमे त्याग है वही प्रसन्न है, वाकी सव ग़म का असवाव है.

— उमर खय्याम

दर्शन

मैंने फूलो मे आवाजे सुनी और गीतो मे जगमगाहट देखी.

— सन्त मार्टिन

ः

मुझे मार्क्स क्या कहता है इससे या सेंट लूथर क्या कहता है इससे किसी से मतलव नही है मेरा स्पष्ट आदेश तो यह है कि जीवन को अपनी आँखो से देखो और अपने निर्णय को सरल भाषा में रख दो.

— सिक्लेयर

ः

जो चीजे दिखती हैं वे क्षणिक है, लेकिन जो नही दिखती वे शाश्वत हैं.

— वाइविल

जीवात्मा जितना निर्मल हो जाता है, उतना ही सूक्ष्म. इन्द्रियो से अगोचर वस्तुए उसे दिखाई देने लगती है.

— भागवत

❁

जब मेरा माशूक आता है, मैं उसे किस नज़र से देखता हूँ ? उसी की नजर से, अपनी से नही, क्योकि सिवाय उसके उसे कोई नही देख सकता.

— इब्न-अल-अरबी

❁

हम दूसरो के आर-पार देखना चाहते है, परन्तु खुद अपने आर-पार देखा जाना पसन्द नहीं करते

— ला रोशे

❁

आँख सबने पाई है, नजर किसी किसी ने.

— मौकिया वैली

❁

बाहरी दर्शन तुम्हारी प्यास नही बुझा सकता

— स्वामी रामदास

❁

जैसी आँख वैसा नजारा.

— ब्लेक

दया

आत्मीयता की एक नजर पीडित हृदय के लिए कुबेर के कोष से भी कही अधिक मूल्यवान है.

— गेटे

जब दया का देवदूत दिल से दुत्कार दिया जाता है और जब आँसुओं का फव्वारा सूख जाता है, तब मनुष्य रेगिस्तान की रेत मे रेंगते साँप के समान हो जाता है.

— इंगरसोल

दया से लबालब भरा हुआ दिल ही सब से बडी 'दौलत है, क्योंकि दुनियावी दौलत तो नीच आदमियो के पास भी देखी जाती है.

— तिरुवल्लुवर

दयालु-हृदय खुशी का फव्वारा है, जो कि अपने पास की हर चीज़ को मुस्कानो से भर कर ताजा बना देता है.

— वाशिंग्टन इर्विंग

मेरी यह प्रबल कामना है कि मैं हर आँख का हर आँसू पोछ दू.

— गाधी

दयाशील अन्तःकरण प्रत्यक्ष स्वर्ग है.

— विवेकानन्द

दया वह भापा है जिसे बहरे सुन सकते है और गूगे समझ सकते है.

— अज्ञात

जो खुदा के बन्दो के प्रति दयालु है, खुदा उसके प्रति दयालु है.

— मुहम्मद

भारी तलवार कोमल रेशम को नही काट सकती. दयालुता और मीठे शब्दों से हाथी को जहाँ चाहे ले जाओ.

— सादी

दया ऐसी दासी है कि वह अपने मालिक को भिखारी की हालत में मरते नही देख सकती.

— सैफर

❀

जैसे चन्द्रमा चाण्डालो के घर को भी रोशनी देता है, वैसे ही सज्जन पुरुष गुणहीन प्राणियो पर भी दया करते है.

— चाणक्य नीति

❀

वे धर्म-ग्रन्थ धर्म-ग्रन्थ नही है जिनमे दया की महिमा न गाई गई हो.

— पद्मपुराण

❀

मैं नाम से इन्सान हूँ, दया से भगवान् हूँ.

— सन्त साइमन

❀

दया सुखो की बेल (लता) है.

— जैन दर्शन

❀

जो निर्बलो पर दया नही करता उसे बलवानो के अत्याचार सहने पडेंगे.

— सादी

❀

दया मनुष्य की कोमलतम भावना का प्रतीक है. जिसमें दया नहीं उसमे विनय नही.

— गांधी

❀

जहाँ दया नही वहाँ अहिंसा नहीं, इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि जिसमें जितनी दया है, उतनी ही अहिंसा है.

— गाधी

दान

दानो मे सर्वश्रेष्ठ दान अभय दान (जीव दया) है.

— भ. महावीर

अनुग्रह के लिए अपनी वस्तु का त्याग करना दान है.

— उमास्वाती

सौ हाथो से जोड़ो और हजार हाथो से बाँटो.

— अथर्व वेद

उस दान मे कोई पुण्य नही है जिसका विज्ञापन हो.

— मसीलन

सब से ऊँचे प्रकार का दान आध्यात्मिक ज्ञान-दान है.

— विवेकानन्द

खुदा कहता है कि तुम खैरात करो, मैं तुम्हे और दूगा.

— हजरत मुहम्मद

ज्ञानी सचय नही करता. वह ज्यो-ज्यो देता जाता है, त्यो-त्यो पाता जाता है.

— लाओत्जे

ईश्वर दान से दस गुना देता है.

— इस्लाम

❀

दो, यदि हो सके तो, गरीव आदमी को हाथ पसारने की शर्म से वचाओ.

— डाइडरट

❀

तुम्हें अपने रास्ते मे खुर वाले आदमी मिलेंगे, उन्हे अपनी पखाज देना; और सीग वाले आदमी मिलेंगे उन्हे जय-मालाएँ देना और पंजो वाले आदमी मिलेंगे, उन्हे अँगुलियो के लिए पखड़ियाँ देना; और वर्छीली जवानो वाले आदमी मिलेंगे उन्हे शब्दो के लिए शहद देना.

— खलील जिब्रान

❀

जो कुछ मैंने दिया था वह मेरे पास अव भी है, जो कुछ व्यय किया था वह विद्यमान था, जो सचित किया था वह मैंने खो दिया.

— अमरवाणी

❀

प्राप्त करने की अपेक्षा दान करना कही अधिक सौभाग्य का द्योतक है.

— एक्ट्स

❀

दानी का धन घटता नही.

— ऋग्वेद

❀

दान करने से गौरव प्राप्त होता है, धन का सचय करने से नही. जल-दान करने वाले मेघ की स्थिति सव से ऊपर है और जल का संचय करने वाले समुद्र की नीचे.

— स्कन्दपुराण

जो कोई महान् दान एकदम करने की प्रतिज्ञा करता है वह कभी भी कुछ नही कर सकेगा.

— सेमुएल जानसन

ज्यो ही पर्स (बटुआ) रिक्त होता है, हृदय समृद्ध होता जाता है.

— विक्टर ह्यूगो

यद्यपि मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं पर्वतो को भी हिला सकता हूँ, फिर भी यदि मुझ में दान-भावना नही है तो मैं कुछ भी नही हूँ.

— बाइबिल

सत्पुरुष की सम्पत्ति का यही फल है कि विपत्ति मे पड़े हुए मनुष्यो के दुखो को दूर करे.

— मेघदूत

दान का प्रत्येक कार्य स्वर्ग-पथ पर गतिशील होने का एक चरण है.

— वीचर

दो व्यक्तियो को उनके गले मे दृढ शिला बांध कर गहरे समुद्र मे डुबो देना चाहिए. एक तो उसे जो अपने को ब्राह्मण कहता है पर विद्या का दान नही करता और दूसरा उसे जिसने धन इकट्ठा कर लिया है परन्तु अकेला ही उसका उपभोग करता है, दूसरो को बाटता नही, दान नही करता है.

— विदुर-नीति

थोडा रहने पर जो दान दिया जाता है, वह हजार के बराबर माना गया है.

— जातक

जो स्वयं नही भोग सकता वह प्रसन्न मन से दान भी नही कर सकता.

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दुख

अनात्म पदार्थों का चिन्तन दुख का कारण है. आनन्दस्वरूप आत्मा का चिन्तन मोक्ष का कारण है.

— शकराचार्य

एक बात जो मैं दिन की तरह स्पष्ट देखता हूँ यह है कि दुख का कारण अज्ञान है और कुछ नहीं.

— विवेकानन्द

जिसने कभी दुख नही उठाया वह सब से भारी दुखिया है और जिसने कभी पीर नही सही वह बडा बेपीर है.

— मेनसियस

उस सरीखा दुखी कोई नही जो चाहता सब कुछ है, करता कुछ नही.

— कलॉडियस

सात सागरो के जल की अपेक्षा मानव के नेत्रो से कही अधिक आँसू बह चुके है.

— बुद्ध

जैसे रात सितारे दिखाती है, रंज हमें सचाइयाँ दिखाता है.

—बेली

चिन्ताएँ, परेशानियाँ, दुख और तकलीफें परिस्थितियो से लडने से नहीं दूर हो सकती, वे दूर होगी अपनी अन्दरूनी कमजोरी दूर करने से, जिसके कारण ही वे सचमुच पैदा हुई है.

— स्वामी रामतीर्थ

हम अपने दुखो को खुद बुलाते है, वे खुदा के भेजे हुए नही आते.

— मेरी कॅरेली

जब रज और दुख अत्यन्त बढ़ जाँय तो निश्चित मानो कि सुख और शान्ति का जमाना शुरू होने वाला है.

— स्वामी रामदास

भव-दुख की चक्की में सब जीव पिसे जा रहे है, केवल सदानन्द-स्वरूप भगवान के भक्त ही बचे हुए है.

— अज्ञात

ईश्वर दुख के तमाचे लगा कर हमे झूठ से हटा कर सचाई की तरफ ले जाता है.

— स्वामी रामदास

जब तक मैंने ऊँचाई से इस धरा को नही देखा था, मैं सोचता था कि कदाचित् मैं ही दुखी हूँ, पर आज तो यहाँ देखने पर मुझे लगता है कि यह दुख की आग तो घर-घर में लगी हुई है.

— पंजाबी सन्त कवि फरीद

विपत्ति से बढ कर इन्सान को जीवन का तजुर्बा सिखलाने वाला कोई भी विद्यालय आज तक नहीं खुला. जिस किसी ने भी इस विद्यालय की

डिग्री ले ली, उसके हाथों में हम बिल्कुल निश्चिन्त होकर अपने जीवन की बागडोर सोंप दे सकते हैं.

— प्रेमचन्द

❖

दुख एक देवदूत है जिसके शीश पर कंटक-किरीट विराजमान हैं.

— हॉवेल

❖

उस दुख से बढ कर कोई दूसरा दुख नहीं है, जो व्यक्त नही किया जा सके.

— लाग फेलो

❖

अनन्त आलोकवान् नक्षत्र तभी चमकते है जब कभी अन्धकार पर्याप्त घनीभूत होता है.

— कार्लाइल

❖

यह केवल अपना-अपना व्यक्तित्व है कि कही शब्द रोते है जब कि आँसू हँसते होते हैं और कहीं शब्द और आँसू दोनो हँसते रहते है जब कि अन्तरात्मा चुप-चुप रोती है.

— अनाम

दोष

मुझे तो ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं दीख पड़ता जो अपने दोष स्वय देख सके और अपने को अपराधी माने.

— कन्फ्यूशियस

ईश्वर उसका भला करे जो मुझ पर मेरे दोष जाहिर कर दे.

— ज्ञानगंगा

जो तुम्हारे दोषो को दिखाता है उसे गड़े हुए धन का दिखाने वाला समझो.

— अज्ञात

बहुत से आदमी उन लोगो से नाराज हो जाते है, जो उनके दोष बताते है, जब कि उन्हें नाराज होना चाहिए उन दोषो से जो कि उन्हें बताये जाते है.

— बैनिंग

अपना दोष कोई नही देख पाता. अपना व्यवहार सभी को अच्छा मालूम देता है. लेकिन जो हर हालत में अपने को छोटा समझता है वह अपना दोष भी देख सकता है.

— अबु उस्मान

अगर हम मे दोष न होते तो हम दूसरों के दोषो को देखने में कम रस लेते.

— फ्रेंकोज

जब कभी मुझे दोष देखने की इच्छा होती है तो मैं स्वयं से ही आरंभ करता हूँ और इससे आगे नही बढने पाता.

— डेविड ग्रेसन

दोष से ही हम सब भरे हैं, मगर दोषमुक्त होने का प्रयास करना हम सब का कर्त्तव्य है.

— गाधी

अपना ही दोष ढूंढ निकालना ज्ञानी जनो का काम है.

— विवेकानन्द

हमें अपने आपको लोगो मे वैसा ही जाहिर करना चाहिए जैसा कि हम वास्तव मे हो. कोरी नुमाइश करना ठीक नही.

— नेहरु

क्यो नाहक दूसरो के ऐब ढूढने चले हो ? माना कि सभी पापी है, सभी अन्धे है, सभी गुनहगार है, लेकिन, तुम दूसरो को क्या उपदेश दे रहे हो ? जरा अपने भीतर तो झाक कर देखो कि वहाँ सुधार की कोई गुन्जाइश है या नही ? अगर है तो फिर तुम्हारे सामने काफी जरूरी काम मौजूद है. सब से पहले इसी पर ध्यान दो सब से पहले अपना सुधार करो और जब तक तुम खुद मैले हो, तब तक तुम्हे दूसरों को उपदेश देने का क्या अधिकार है ?

— गाधी

धर्म

धर्म-अहिसा, सयम, तप-सर्वश्रेष्ठ मगल है. जिसका मन इस धर्म में लगा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते है.

भ. महावीर

मनोरम काम-भोगो का मिलना सुलभ है; स्वर्ग का वैभव पाना भी सहज है; पुत्र, मित्र आदि का संयोग भी सुलभ है, परन्तु एक धर्म की प्राप्ति होना दुर्लभ है.

— प्रास्ताविक

आदमी धर्म के लिए झगड़ेगा, उसके लिए लिखेगा, उसके लिए मरेगा, सब कुछ करेगा, मगर उसके लिए जियेगा नहीं.

— कोल्टन

❧

धर्म एक भ्रमात्मक सूर्य है, जो कि मनुष्य के गिर्द तब तक घूमता रहता है, जब तक कि मनुष्य मनुष्यता के गिर्द नहीं घूमता.

— कार्ल मार्क्स

❧

विज्ञान और धर्म एक दूसरे के उसी तरह अविरोधी है जिस तरह प्रकाश और बिजली.

— अज्ञात

❧

सात्त्विक लोगो को एकान्त छोड़ना चाहिए और बाज़ार में आना चाहिए. जब तक धर्म बाजार में नही आयेगा और मन्दिर, मठ, मसजिद मे ही कैद रहेगा तब तक उसकी शक्ति नही बनेगी ? इधर तो दान-धर्म चलता है, पर बाजार मे धोखाधड़ी चलती है ! धर्म डरपोक बन कर मन्दिर मे बैठा रहता है. अब उसको आक्रमण करना चाहिए, यानि बाजार मे, व्यवहार मे, राजनीति मे धर्म चलना चाहिए

— विनोबा

❧

धर्म को छोड़ दोगे तो वह तुम्हे मार डालेगा, धर्म का पालन करोगे तो वह तुम्हारी रक्षा करेगा.

— महाभारत

❧

मुझे यह न पूछो कि धर्म से क्या फायदा है ? बस एक बार पालकी उठाने वाले कहारो की ओर देख लो और फिर उस आदमी को देखो जो उसमे सवार है ?

— तिरुवल्लुवर

धर्म मनुष्य के हृदय में अनन्त का सगीत है.

— फाल्डिग

❀

नेक जिन्दगी ही धर्म है.

— थॉमस कुतर

❀

सचमुच, सब धर्म एक ही प्रभु की तरफ ले जाने वाले मार्ग है.

— स्वामी रामदास

❀

धर्म पर दृढ रहने के कारण जिन्हें कष्ट मिलता है, वे धन्य हैं, क्योंकि भगवान का साम्राज्य उन्ही को प्राप्त होता है.

— ईसा

❀

मनुष्य का बन्धु एक मात्र धर्म है, जो मरने के बाद भी आदमी के साथ जाता है. बाकी हर चीज शरीर के साथ मिट जाती है.

— मनु

❀

जो धर्म दूसरे धर्म का बाधक है, वह धर्म नही कुधर्म है. सच्चा धर्म वही है जो किसी दूसरे धर्म का विरोधी न हो.

— महाभारत

❀

धर्म वस्तुतः एक ही लक्ष्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न मार्ग हैं. जब हम एक ही लक्ष्य पर पहुँचना चाहते है तो किसी भी मार्ग से जाने मे क्या अन्तर पड़ता है.

— गांध

❀

जो हमे मोक्ष की ओर बढाता है, जो सयम की शिक्षा दे, वह धर्म है,

— गाधी

हमारे लिए धर्म हमेशा से ही कट्टर मतो का पिटारा नही, बल्कि आत्मा की खोज का शास्त्र रहा है.

— राजगोपालाचार्य

धन

निर्धन आदमी ऐसा है जैसा विना पंखो का पक्षी या विना मस्तूलो का जहाज.

— अज्ञात

धन की तीन गति हैं—दान, भोग और नाश. जो न देता है, न भोगता है, उसकी तीसरी गति होती है.

— भर्तृहरि

खुद पर खर्च किया हुआ पैसा गले का पत्थर हो सकता है, दूसरो पर खर्च किया हुआ हमे फरिश्तो के पंख दे सकता है.

— हिचकॉक

धन की बड़ी जबरदस्त उपाधि है. ज्योही आदमी धनी हुआ कि बिल्कुल बदल जाता है.

— रामकृष्ण परमहंस

धन जमा करने मे अपनी उम्र मत खो. धन ठीकरी है और उम्र मोती.

— सादी

ऐ संतोष ! मुझे धनी बनादे, क्यो कि तेरे बिना कोई धनी नही है.

— सादी

ॐ

जहाँ धन ही परमेश्वर है वहाँ सच्चे परमेश्वर को कोई नही पूजता.

— अज्ञात

ॐ

सोना मूर्ख का परदा है जो कि उसके तमाम दोषो को दुनिया से छिपाता है.

— फैलमथ

ॐ

धन खाद की तरह है, जब तक फैलाया न जाय बहुत कम उपयोगी है.

— बेकन

ॐ

धन से तुम को सिर्फ रोटी मिल सकती है, इसे अपना उद्देश्य और साध्य न समझो.

— रामकृष्ण परमहंस

ॐ

अन्याय का धन दस वर्ष ठहरता है, ग्यारहवाँ वर्ष लगने पर समूल नष्ट हो जाता है.

— अज्ञात

ॐ

पैसे से प्यार करना ईश्वर से घृणा करना है.

— एस.जी. मिल्स

धैर्य

जिसके पास धैर्य है वह जो कुछ इच्छा करता है, प्राप्त कर सकता है.

— फ्रैंकलिन

धैर्य और परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं जो शक्ति और शीघ्रता से कभी नही.

— लॉ फॉन्टेन

वे कितने निर्धन हैं जिन के पास धैर्य नही है. क्या आज तक कोई जख्म बिना धैर्य के ठीक हुआ है ?

— शेक्सपियर

जितनी जल्दी करोगे उतनी देर लगेगी.

— चर्चिल

धैर्य स्वर्ग की कुंजी है.

— तुर्की कहावत

धैर्य कडवा है पर फल मीठा है.

— रूसेर

सब्र से बहुत काम निकल आते हैं, मगर जल्दबाज मुंहकी खाते हैं. मैंने जगल मे अपनी आंखो देखा है कि धीरे-धीरे चलने वाला तो मजिल

पर पहुँच गया, मगर तेज दौड़ने वाला बाजी खो बैठा. तेज चलने वाला चलते-चलते थक गया मगर धीरे-धीरे चलने वाला ऊँट बराबर चलता रहा.

— शेखसादी

✿

मैं अकेला ही संग्राम नहीं करता, बल्कि इस संग्राम में मेरा साथी धैर्य भी है.

— अज्ञात

✿

क्षण भर का धीरज, दस बरस की राहत.

— यूनानी कहावत

नम्रता

यदि आप मे अहंकार नही है, तो किसी धर्म-पुस्तक की एक पंक्ति पढ़ें, या किसी मन्दिर में पैर रखे बिना ही आप निर्विवाद रूप से मोक्ष पद पा लेंगे.

— स्वामी विवेकानन्द

✿

बड़े को छोटा बन कर रहना चाहिए क्योंकि जो अपने आप को बड़ा मानता है वह छोटा बनाया जाता है, और जो छोटा बनता है वह बड़ा पद पाता है.

— ईसा

आदमी का अहकार ज्यो-ज्यो कम होता है त्यो-त्यो उसमें ईश्वरत्व बढता है.

— जी. वी. चौग्रार

❧

विनय समस्त गुणो का शृङ्गार है.

— अज्ञात

❧

सेवा की जिन्दगी नम्रता की जिन्दगी होनी चाहिए.

— गांधी

❧

फल के आने पर वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, सम्मति के समय सज्जन नम्र हो जाते हैं – परोपकारियो का स्वभाव ही ऐसा है.

— कालिदास

❧

अत्यन्त मधुर सुगन्ध वाला फूल सलज्ज और विनीत होता है.

— वर्डस्वर्थ

❧

अगर हमे स्वर्ग को जाना है तो हमें नम्र होना पड़ेगा, वहाँ छत ऊँची है पर दरवाजा नीचा है.

— हेरिक

❧

नम्रता माने लचीलापन. लचीलेपन मे तनने की भी शक्ति है, जीतने की कला है और शौर्य की पराकाष्ठा है

— विनोबा

दुनिया के विरुद्ध खडे रहने की शक्ति प्राप्त करने के लिए मग़रूर या तुच्छ बनने की जरूरत नही है. ईसा दुनिया के खिलाफ खडा रहा, बुद्ध अपने जमाने के खिलाफ़ गया. प्रह्लाद ने भी वही किया. वे सब नम्रता के पुतले थे. अकेले खडे रहने की शक्ति बिना असम्भव.

— गांधी

३

नम्रता के मानी है 'मैं' का बिल्कुल मिट जाना.

— गांधी

३

धर्म में पहली चीज क्या है ? धर्म मे पहली, दूसरी और तीसरी चीज नही, सब कुछ नम्रता है.

— रस्किन

नरक

आत्मा को बरबाद करने वाले नरक के तीन दरवाजे है—काम, क्रोध और लोभ.

— गीता

२

अति क्रोध, कटुवाणी, दरिद्रता, स्वजनो से वैर, नीचो का संग और अकुलीन की सेवा, ये नरक मे रहने वालो के लक्षण है.

— चाणक्य नीति

अगर तुम नरक को जानना चाहते हो तो समझ लो कि ईश-विमुख अज्ञानी मनुष्य की सोहबत ही दुनिया मे नरक है.

— शब्सतरी

ॐ

जिस व्यक्ति ने भूख से कुम्हलाते पुत्र को, दूसरे के घर में सेवा करने वाली पत्नी को, विपत्तिग्रस्त मित्र को, दुही हुई किन्तु चारे के अभाव मे भूखी पडी रंभाती गौ को, पथ्य के अभाव मे रोग-शैय्या पर पड़े हुए माता-पिता को तथा वैरी से पराजित अपने स्वामी को देख लिया है, उसे नरक देखने की जरूरत क्या है? इससे अधिक अप्रिय और वहाँ क्या होगा?

— कल्हण

ॐ

नरक क्या है—परवशता.

— शंकराचार्य

नारी

स्त्रियो का सम्मान करो. वे हमारे पार्थिव जीवन को स्वर्गीय सुमनो से सुरभित एव गुम्फित बनाती हैं.

— शिलर

ॐ

जहाँ स्त्रियो का सम्मान होता है वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते है.

— मनु

ससार में एक नारी को जो कुछ करना है वह पुत्री, वहन, पत्नी और माता के पावन कर्त्तव्यो के अन्तर्गत आ जाता है.

— स्टीन

❀

पुरुष नारियो के खिलौने हैं, किन्तु स्वयं नारियाँ शैतान के खेलने के उपकरण हैं.

— विक्टर ह्यूगो

❀

अवला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

— मैथिलीशरण

❀

नारी उपासना के योग्य कितनी सौन्दर्यमय एवं प्रेम के योग्य कितनी स्वर्गीय है.

— द. मैस्तरी

❀

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत सी वहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में॥

— जयशंकर प्रसाद

❀

सर्प अत्यन्त निकट आने पर ही दशन करता है परन्तु नारी तुम्हें पर्याप्त दूरी से भी दशित करती है. सर्प का विष इस शरीर मात्र को नष्ट करता है, किन्तु वासना पारलौकिक जीवन मे प्रवेश कर कई जन्मो का नाश कर देती है. वासना से घृणा करो, किन्तु नारी से नही.

— स्वामी शिवानंद सरस्वती

स्त्रियो की अवस्था के सुधार न होने तक विश्व के कल्याण का कोई मार्ग नही.

— विवेकानन्द

नारी प्रकृति की वेटी है, उस पर क्रोध न करो. उसका हृदय कोमल होता है, उस पर विश्वास करो.

— महाभारत

जब मैं नारी-जाति को देखता हूँ तो मेरा हृदय श्रद्धा से भर उठता है और मस्तक नत होने लगता है. एक नारी रूप मे विश्व की सारी प्रवृत्तियाँ समाविष्ट हो जाती है. मातृत्व की मधुमती आकाक्षा, प्रणय की पावनता और करुणा का असीम वरुणालय नारी हृदय के ही पुण्य हैं.

— नलिन

यदि किसी नारी को प्राण-दण्ड भी मिलता हो तो प्रथम वह अपने शृंगार-प्रसाधन के लिए कुछ क्षणो की याचना करेगी.

— चैम्फर्ट

पवित्र नारी सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम कृति होती है, वह सृष्टि के सपूर्ण सौन्दर्य को आत्मसात् किए रहती है.

— रविन्द्रनाथ ठाकुर

नारी या तो प्रेम करती है या फिर घृणा ही. इसके वीच का कोई मार्ग उसे ज्ञात नही.

— साइटस

जिस समय स्त्री का हृदय पवित्रता का आगार बन जाता है उस समय उसमे अधिक कोमल कोई वस्तु संसार में नही रह जाती.

— लूथर

पंचम अध्याय

— प

- परमात्मा
- परोपकार
- परिग्रह
- पश्चाताप
- पाप
- पुण्य
- पुरुषार्थ
- प्रमाद
- प्रार्थना
- प्रायश्चित्त
- प्रेम
- ब्रह्मचर्य
- भक्त
- भगवान
- भक्ति
- भलाई
- भावना
- भूल
- भोग
- महात्मा
- मरण
- मन
- माया
- मानव
- मानवता
- मित्रता
- मित्र
- मुक्ति
- मोक्ष
- मोह
- मौन
- मृत्यु

परमात्मा

ग्रात्मा ही परमात्मा.

– भ. महावीर

❁

परमात्मा सिर्फ पवित्रात्मा का दूसरा नाम है.

– जैन दर्शन

❁

यह सारा विश्व ग्रपनी ग्रात्मा मे है, ग्रौर ग्रपनी ग्रात्मा परमात्मा में है.

– श्रीकृष्ण

❁

जिन्हे दोनो वक्त भूखे रहना पडता है उनसे मैं ईश्वर की चर्चा कैसे करू ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटी के ही रूप मे प्रकट हो सकते हैं.

– गाधी

❁

परमात्मा ग्रजन्मा है, ग्रमर है, ग्रकाम है, ग्रानन्द-तृप्त है, उसे जानने वाला मृत्यु से नही डरता.

– ग्रथर्ववेद

❁

परमात्मा ज्ञान-स्वरूप है, सर्वज्ञ है, शक्ति-स्वरूप है, सर्वव्यापक है.

– सामवेद

❁

मेरे लिए परमात्मा सत्य है, प्रेम है.

– गाधी

परमेश्वर सत्य है, उसकी सच्चाई के सामने वाकी सब चीजें झूठी है. वह हर तरह के व्यक्तित्व से अलग है. वहाँ न 'मैं' है, न 'तू' है, न 'वह' है वह सब मे रमा हुआ है.

— गीता

परमात्मा सदा एक-रस, एक-रूप रहता है.

— अथर्ववेद

परम उन्नत मनुष्य ही परमेश्वर है.

— अज्ञात

परमात्मा कहता है कि मैं दानशील व्यक्ति के लिए धन की वर्षा करता हूँ.

— ऋग्वेद

परमात्मा साक्षात् कल्पवृक्ष है. हम चिन्ता मे रहें तो वह चिन्ता देता है, आनन्द मे रहें तो आनन्द.

— श्री ब्रह्म चैतन्य

क्या तुम पूछते हो, परमात्मा कहाँ रहता है ? आत्मा में, और जब तक आत्मा शुद्ध और पवित्र न हो, उसमे परमात्मा के लिए स्थान नहीं है.

— अज्ञात

मैं धुधले तौर पर जरूर यह अनुभव करता हूँ कि जब मेरे चारो ओर सब कुछ बदल रहा है, मर रहा है, तब भी इन सब परिवर्तनो के नीचे एक जीवित शक्ति है जो कभी नहीं बदलती, जो सब को एक मे ग्रथित

करके रखती है, जो नई सृष्टि करती है, उसका संहार करती है और फिर नये सिरे से पैदा करती है. यही शक्ति ईश्वर है, परमात्मा है; मैं मानता हूँ कि ईश्वर जीवन है, सत्य है, प्रकाश है. वह प्रेम है, वह परम मगल है.

— गांधी

ॐ

मैं ही सब के हृदयो मे रहता हूँ, यह विश्व मैं ही हूँ और मुझ से ही यह विश्व उत्पन्न हुआ है.

— श्रीकृष्ण

ॐ

परमात्मा सदैव कृपा-रूप है. जो शुद्ध अन्त करण से उसकी मदद मागता है, उसको वह अवश्य मिलती है.

— विवेकानन्द

परोपकार

बादल अपनी जान दे कर दूसरे के प्राणो को बचाता है.

— ज्ञानशतक

ॐ

अगर आदमी परोपकारी नही है तो उसमे और दीवार पर खिंचे हुए चित्र मे क्या फर्क है ?

— सादी

नदियां स्वयं जल नहीं पीती, वृक्ष स्वयं फल नही खाते, वादल अपने लिए नही वरसते. सज्जनो की सम्पत्ति तो परोपकार के लिए ही होती है.

— संस्कृत सूक्ति

परोपकारी लोग हमेशा प्रसन्न चित्त होते हैं.

— अज्ञात

किसी वच्चे को खतरे से वचा लेने पर हमें कितना आनन्द आता है परोपकार इसी अनिर्वचनीय आनन्द-प्राप्ति के लिए किया जाता है.

— अज्ञात

अठारह पुराणो के अन्दर व्यासजी ने दो ही वातें कही हैं, वे ये है— दूसरो का भला करना ही पुण्य है और किसी दूसरे को तकलीफ देना ही पाप है.

— अज्ञात

फलो के आने पर वृक्ष नम्र हो जाते हैं. नये जलो से वादल नीचे लटक आते हैं. सत्पुरुष समृद्धियो को पाकर अनुद्धत रहते हैं. परोपकार करने वालो का यही स्वभाव होता है.

— कालिदास

छोटे बच्चो को दी गई खाने वगैरह को चीजें घर के यजमान को पहुंचती हैं, उसी प्रकार जन-सेवा परमात्मा को पहुंचती है.

— श्री ब्रह्म चैतन्य

परिग्रह

संसार के सब जीवो को जकड़ने वाले परिग्रह से बढ कर कोई दूसरा बन्धन नहीं.

— प्रश्न व्याकरण सूत्र

☙

जो साधक अल्पाहारी, अल्प-भाषी, अल्प-शायी और अल्प-परिग्रही है, उसे देवता भी प्रणाम करते है.

— आवश्यक-निर्युक्ति

☙

भगवान् महावीर ने पदार्थों को परिग्रह नही कहा है. उन्होने वास्तविक परिग्रह मूर्च्छा—आसक्ति को कहा है.

— दशवैकालिक

☙

चेतन अचेतन रूप परिग्रह मे ममत्त्व रूप परिणाम होना परिग्रह है.

— आचार्य उमास्वाती

☙

परिग्रह का अर्थ है भविष्य के लिए प्रबन्ध करना. सत्यान्वेपी प्रेम-धर्म का अनुयायी, कल के लिए किसी चीज का संग्रह नही कर सकता है.

— गाधी

☙

संग्रह करने वाला सुखी नही हो सकता.

— पद्म. सृष्टि.

सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्षण परिग्रह बढ़ाना नही हैं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसको घटाना है.

— गांधी

जमीन उस पर हँसती है जो किसी जगह को अपनी बताता है

— भारतीय कहावत

जिसको विश्व अपना घर लगता है, उसे परिग्रह रखने की जरूरत नहीं

— अज्ञात

धन किसी क्षणिक आवश्यकता की पूर्ति का साधन है. अपने परिग्रह को अपना परमात्मा न माने जाओ

— अज्ञात

पश्चाताप

मुझे कोई पछतावा नही है, क्योंकि मैंने कभी किसी का कोई बुरा नही किया.

— गाधी

पश्चाताप हृदय की वेदना है और निर्मल जीवन का उदय.

— शेक्सपियर

सुधार के विना पश्चाताप ऐसा है जैसे छेद वन्द किये वगैर जहाज से पानी उलीचना.

— पामर

☙

पश्चाताप हृदय के शोक का और स्वच्छ जीवन के उदय का द्योतक है

— शेक्सपियर

☙

मन का सभी मैल धुल जाने पर ईश्वर का दर्शन होता है. मन मानो मिट्टी से लिपटी हुई एक लोहे की सुई है, ईश्वर है चुम्वक. मिट्टी के रहते चुम्वक के साथ संयोग नही होता. रोते-रोते (शुद्ध हृदय से पश्चाताप करते) सुई की मिट्टी धुल जाती है सुई की मिट्टी यानी काम, क्रोध, लोभ, पाप-बुद्धि, विषयबुद्धि आदि. मिट्टी के धुल जाने पर सुई को चुम्वक खीच लेगा, अर्थात् ईश्वर-दर्शन होगा.

— रामकृष्ण परमहस

☙

पश्चाताप के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य पिछले पापो पर सच्चे मन से लज्जित, और फिर कभी पाप करने का प्रयत्न न करे

— सन्त अवूवकर

☙

दुनिया भर के पाप दूर हो सकते है, यदि उनके लिए सच्चे दिल से अफसोस करले.

— मुहम्मद साहव

☙

सोने के पहले तीन चीजो का हिसाव अवश्य कर लेना चाहिए. पहली वात यह सोचो कि आज के दिन मुझ से कोई पाप तो नही हुआ है. दूसरी वात यह सोचो कि आज कोई उत्तम कार्य किया है या नही ? तीसरी वात यह सोचो कि कोई करने योग्य काम मुझ से छूट गया है या नही ?

— अफलातून

पाप

पापी से घृणा मत करो, उसके पाप से घृणा करो. शायद पूर्ण निष्पाप तो तुम भी न होगे.

— भ. महावीर

❀

दहकती आग जैसे सांप को भस्म करके रख देती है. उसी प्रकार मेरी उज्ज्वल भक्ति सब पापो का नाश कर देती है.

— श्री कृष्ण

❀

पाप के साथ ही सजा के वीज वो दिये जाते है.

— हेसियोड़

❀

अगर तू पाप और बुराइयो से दूर रहेगा तो स्वर्ग के वाग से नजदीक रहेगा.

— सादी

❀

दूसरो के पाप हमारी आँखो के सामने रहते हैं, खुद के हमारी पीठ के पीछे

— सैनेका

❀

जब तक पाप पकता नही, तभी तक मीठा लगता है, लेकिन जब फलने लगता है, तब बड़ा दुख देता है.

— बुद्ध

पाप क्या है ? जो दिल में खटके.

— मुहम्मद

❁

वह अपने आप को धोखा देता है जो समझता है कि उसके कुकर्म ईश्वर की नजर छिपे हुए हैं.

— पिण्डर

❁

एक पाप दूसरे पाप के लिए दरवाजा खोल देता है.

— अज्ञात

❁

पाप का आरम्भ चाहे प्रातःकाल की तरह चमकदार हो, मगर उसका अन्त रात्रि की तरह अन्धकारपूर्ण होगा.

— टालमेज

❁

पाप विनाश की वंशी है, जिसके काटे का ज्ञान मछली को लीलते समय नही, मरते समय होता है.

— हरिभाउ उपाध्याय

❁

पाप को पेट में मत रख, उगल दे. जहर तो पेट मे रख लेने से शरीर को ही मारता है, किन्तु पाप तो सारे सत्य को ही मिटा देता है.

— गांधी

पुण्य

पुण्य कार्यों का सदा शुभ फल मिलता है, चाहे देर से मिले मगर जरूर मिलता है.

– फांदीव

❖

पुण्य और पाप दोनों पाप हैं – वह लोहे की जंजीर है, वह सोने की.

– शंकराचार्य

❖

पुण्य का परिणाम सम्पत्ति नहीं, सुबुद्धि. पाप का परिणाम गरीबी नहीं, कुबुद्धि.

– विनोबा

❖

पुण्य, पाप से परहेज करने में नहीं है, बल्कि उसे न चाहने में है.

– जार्ज बर्नार्ड शा

❖

प्यारे, पुण्यों को मैं बुरा नहीं मानता, पर बात सिर्फ इतनी है कि वे आत्मा की महत्ता के साथ नहीं लागू होते.

– नीत्से

❖

पुण्य का मार्ग शान्ति का मार्ग है.

– नैतिक सूत्र

❖

पुण्य की जड़ पाताल में.

– भारतीय कहावत

पुरुषार्थ

दीपक बोलता नही किन्तु चमकता है वैसे ही इन्सान को बोलना नही, कर्म करना है

— अज्ञात

बार-बार यत्न करने से असभव भी संभव हो जाता है. शत्रु मित्र हो जाता है और विष अमृत.

— योगवासिष्ठ

मैंने आज तक कोई आदमी नही देखा जो प्रति दिन जल्दी उठता हो, मेहनत करता हो और ईमानदारी से रहता हो, फिर भी दुर्भाग्य की शिकायत करता हो

— एडिसन

आलसी और अनुपयोगी के सौ वर्ष के जीवन से दृढतापूर्वक उद्योग करने वाले का एक दिन का जीवन श्रेष्ठ है

— धम्मपद

भाग्य पुरुपार्थ का अनुसरण करता है.

— चाणक्य सूत्र

प्रमाद

जैसे पेड़ के पत्ते पीले पड़ कर झड़ जाते हैं, उसी तरह जिन्दगी—उम्र पूरी होने पर खत्म हो जाती है. इसलिए क्षण भर भी प्रमाद न करो.

— भ. महावीर

❂

अगर तुम प्रमादी हो तो विनाश के मार्ग पर हो.

— वीचर

❂

अधूरा काम और अपराजित शत्रु—ये दोनो बिना बुझी आग की चिनगारियाँ है. मौका पाते ही ये दानवीय बन जायेंगे और उस लापरवाह आदमी को दबा देंगे.

— तिरुवल्लुवर

❂

मनुष्य की अपेक्षा तो भेड़-बकरे भी अधिक सचेत होते हैं क्यों कि वे गडरिये की आवाज सुन कर खाना-पीना भी छोड़ कर उसकी ओर तुरन्त दौड़ पड़ते हैं. दूसरी ओर मनुष्य इतने लापरवाह है कि ईश्वर की ओर जाने की बाँग सुन कर भी उधर न जाकर आहार-विहार मे तल्लीन रहते है.

— हुसेन बसराई

❂

प्रमाद उतना शरीर का नहीं जितना मन का होता है.

— रोशे

जागरूक व्यक्ति जनता की सेवा कर सकता है.

—सामवेद

❧

शैतान औरो को प्रलोभित करता है, प्रमादी आदमी शैतान को प्रलोभित करता है.

—अंग्रेजी कहावत

❧

अच्छा, तो भिक्षुओ ! मैं तुम से कहता हूँ "संसार की सभी चीजें बनी है, इसलिए बिगड़ने वाली है, नश्वर है. तुम अपने लक्ष की प्राप्ति मे प्रमाद न करो" यही तथागत के अन्तिम शब्द हैं

—बुद्ध

प्रार्थना

हमारी गन्दगी हमने जब बाहर नही निकाली है, तब तक प्रभु की प्रार्थना करने का हमे कुछ हक है क्या ?

—गांधी

❧

हे प्रभो, आप हमारी बुद्धि को शुद्ध करें, हमारी वाणी को मधुर करें.

—यजुर्वेद

❧

प्रार्थना सुबह की चाभी हो और शाम की चटखनी.

—मैथ्यू हैनरी

प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है.

— गांधी

ईश्वर को पत्र लिखने मे न कागज चाहिए, न कलम, न दवात, न शब्द. उस पत्र का नाम है—प्रार्थना.

— गाधी

प्रार्थना वही शोभा दे सकती है—ईश्वर को जो ठीक लगे सो करे.

— गाधी

एक ही प्रार्थना से प्रभु का आसन डोल उठता है.

— जापानी कहावत

प्रार्थना याचना करना नही है, वह तो आत्मा की पुकार है.

— गांधी

प्रार्थना वह पख है जिससे आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ती है, और आराधना वह आंख है जिससे हम प्रभु को देखते हैं.

— ऐम्ब्रोज

मांगो, तुम्हें दिया जायेगा, खोजो, तुम पाओगे; खटखटाओ, तुम्हारे लिए दरवाजा खुलेगा.

— बाइबिल

प्रार्थना पश्चात्ताप का एक चिन्ह है.

— गांधी

प्रार्थना में असीम शक्ति है.

— गाधी

ॐ

प्रार्थना से दिल को चैन और ज्ञान तन्तुओ को आराम मिलता है.

— स्टीवर्ट

ॐ

पवित्र हृदय से निकली हुई प्रार्थना कभी व्यर्थ नही जाती.

— गाधी

ॐ

शब्द जितने कम हो, प्रार्थना उतनी ही उत्तम होती है.

— ल्यूथर

ॐ

क्या प्रार्थनाओ का सचमुच कुछ असर है ? हाँ, जब मन और वाणी एक होकर कोई चीज माँगते है तो उस प्रार्थना का जवाब मिलता है.

— रामकृष्ण परमहंस

ॐ

प्रार्थना मे वाणी और हृदय को मिला दें, एक उगली से गाठ नही खुलती.

— अज्ञात

ॐ

प्रार्थना मे साकार मूर्ति का मैंने निषेध नही किया है. हाँ, निराकार को ऊँचा स्थान दिया है ..मेरी दृष्टि से निराकार अधिक अच्छा है.

— गाधी

ॐ

प्रार्थना मे जो मागोगे, मिलेगा, अगर विश्वास हो तो

— बाइबिल

प्रायश्चित

सच्चे हृदय से पश्चाताप कर लेना मानव के लिए यही सब से बड़ा प्रायश्चित है.

— अज्ञात

जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है, उसी का प्रायश्चित शुद्धतम है.

— गांधी

पाप कर के प्रायश्चित करना कीचड़ में पैर डाल कर धोने के समान है.

— अज्ञात

प्रायश्चित की तीन सीढ़ियां हैं—आत्मग्लानि, दूसरी बार पाप न करने का निश्चय और आत्म-शुद्धि.

— जुन्नेद

प्रेम

आपने प्रेम का रहस्य जान लिया तो फिर जानने को और बाकी ही क्या रहा ?

— थोरो

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका सौरभ.

— विक्टर ह्यूगो

❧

प्रेम और वासना मे उतना ही अन्तर है जितना कंचन और काँच में.

— प्रेमचंद

❧

पुरुष अक्सर प्रेम करता है किन्तु थोडा ही. नारी कभी ही प्रेम करती है तो असीम.

— वास्टर

❧

प्रेम एक वेदनापूर्ण प्रसन्नता है.

— अनाम

❧

प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है. समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है.

— बुद्ध

❧

जो जिसके चित्त मे बसता है वह उससे दूर होते हुए भी दूर नही रहता, निकट ही जान पड़ता है. इसके विपरीत, जो जिसके चित्त में नही रहता वह समीप होते हुए भी दूर ही जान पड़ता है.

— चाणक्य

❧

पुरुष के प्रेम का आरम्भ प्रेम से होता है, पर अन्त नारी पर. नारी के प्रेम का आरम्भ पुरुष से होता है, पर अन्त प्रेम पर.

— अनाम

नित्य दर्शन होने के कारण सूर्य की ओर कोई ध्यान नही देता, जाड़े मे उसके यदाकदा निकलने पर सब स्वागत करते हैं.

—फारसी कवि

परमात्मा पूजा से नही वरन् प्रेम से मिलता है.

— दयानन्द

प्रेम जीवन का प्राण है ? जिसमें प्रेम नही वह सिर्फ मास से घिरी हुई हड्डियो का ढेर है.

—तिरुवल्लुवर

प्रेम स्वर्ग का रास्ता है.

—टालस्टाय

प्रेम आँखो से नही, बल्कि हृदय से देखता है और इसीलिए प्रेम के देवता को अन्धा बताया गया है.

— शेक्सपियर

प्रेम झोपडो को सुनहरी महल बना देता है.

—होल्टी

प्रेम वह सुनहरी जजीर है जिससे समाज परस्पर बंधा हुआ है.

—गेटे

बहिन और भाई के प्रेम मे पवित्रता, पति और पत्नी के प्रेम मे मादकता. पवित्रता शान्ति दिलाती है और मादकता व्याकुल कर देती है.

—हरिभाऊ उपाध्याय

जहाँ अधिक प्रेम है वहाँ अधिक दुख है.

— इटालियन कहावत

❧

ऊँट पर बैठ कर धक्कों से नही बचा जा सकता, यही बात लौकिक प्रेम की है.

— स्वामी रामतीर्थ

❧

प्रेम की अग्नि, यदि एक बार बुझ जाय तो फिर बड़ी मुश्किल से जलती है.

— अज्ञात

❧

प्रेम कमान की तरह है जो कि अत्यधिक तानने पर टूट जाती है.

— इटालियन कहावत

❧

प्रेम और धुआ छिपाये नही छिपते.

— फ्रान्सीसी कहावत

❧

बिना प्रेम की जिन्दगी मौत है.

— गाधी

❧

प्रेम एक ऐसी जड़ी है जो कट्टर दुश्मनो को भी दोस्त बना देती है. यह बूटी अहिंसा से प्रकट होती है.

— गाधी

❧

कहाँ चन्द्रमा है, कहाँ समुद्र है! कहाँ सूर्य है, कहाँ कमल! कहाँ बादल, कहाँ मोर! कहाँ भौंरे हैं, कहाँ मालती! कहाँ हस है, कहाँ मानसरोवर! जो जिसको चाहता है, वह उसके पास रहे या दूर, प्रियतम ही है.

— संस्कृत सूक्ति

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य उत्तम तप, नियम, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, संयम और विनय का मूल है.

— जैन दर्शन

तप मे ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ है.

— सूत्रकृताङ्गसूत्र

जो व्यक्ति दुष्कर ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करता है, उसे देव, दानव, गन्धर्व, दक्ष, राक्षस और किन्नर आदि सब नमस्कार करते हैं.

— उत्तराध्ययनसूत्र

ब्रह्मचर्य ही जीवन है, वीर्य-हानि ही मृत्यु है

— अज्ञात

ब्रह्मचर्य जीवन ही परम पुरुषार्थमय जीवन है.

उडिया बाबा

जो जीवन का वास्तविक आनन्द लेना चाहें उन्हें सदा ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये

— गाधी

ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला प्रकाशमान ब्रह्म को धारण करता है और उसमे समस्त देवता ओत-प्रोत होते हैं.

—अथर्ववेद

ब्रह्मचर्य दुर्गति को नष्ट कर देता है.

— चाणक्य

❧

ब्रह्मचारी तप और श्रम का जीवन व्यतीत करता हुआ समस्त राष्ट्र के उत्थान मे सहायक होता है.

— अथर्ववेद

❧

ससार की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक ज्ञान की रचनाएँ प्राय. ब्रह्मचारी लेखको की लेखनी से ही निसृत हुई है.

— बेकन

❧

मक्खन अग्नि पर रहे और न पिघले !!
नौका भँवर मे चले और न डूबे !!
पानी ढाल की ओर हो और न बहे !!
ये सब आश्चर्य है, पर इन से कही अधिक आश्चर्य यह है कि पुरुष और स्त्री [प्रेम और सौन्दर्य की स्थिति मे] एक शय्या पर सोयें और ब्रह्मचर्य का पालन करें.

— पथ और पाथेय

भक्त

भगवान का भक्त होकर कोई भी दुखी नही रह सकता, यह हमारा अनुभव है.

— श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

जो ईश्वर भक्त नही है वह धनवान होने पर भी कंगाल है.

— सादी

ॐ

भगवान का सच्चा भक्त वही है, जो सब जगह भगवान को देखता है. भगवान से अधिक अथवा भगवान से बाहर कोई भी वस्तु नही है, सब कुछ जड़, चेतन, मनुष्य, पशु, पक्षी भगवान ही है फिर तुम क्यो किसी को बुरा कहोगे ? क्या तुम भक्त होकर भगवान को गाली दोगे ! यदि तुम दूसरे किसी को बुरा कहते हो तो अपने ही भगवान को बुरा कहते हो. इससे बढ़ कर राग-द्वेष को मिटाने की कोई और औषध नही है.

— उडिया बाबा

ॐ

हे अर्जुन ! जो केवल मेरे ही भक्त हैं, वे मेरे वास्तविक भक्त नहीं. मेरे उत्तम भक्त तो वे है जो मेरे भक्तों के भक्त हैं.

— श्रीकृष्ण

ॐ

भक्त के हृदय मे भगवान बसते हैं, भगवान के हृदय मे भक्त.

— ज्ञान गगा

ॐ

भगवान अपने आश्रितो को अपनी ओर इस तरह खीचते है जैसे चुम्बक लोह को.

— शंकराचार्य

भगवान

भगवान सदा भक्त के हृदय-मन्दिर में रहते है और अपने प्रिय भक्त से निरन्तर प्रेमालाप करते रहते है.

— स्वामी रामदास

❂

जहाँ सत्य और प्रेम है वहाँ भगवान है.

— रेटी नोस

❂

हमारे हृदय में कोई विकारी भाव न आये, किसी भी प्रकार का भय न रहे और नित्य प्रसन्नता रहे तो समझना कि हृदय मे भगवान वास करते हैं.

— गाधी

❂

भगवान हर इन्सान से कहता है—मैं तेरे लिए इन्सान बनता हूँ. अगर तू मेरे लिए भगवान न बने तो तू मेरे प्रति अन्याय करता है.

— मिस्टर एकहार्ड

भक्ति

जब मैं परमात्मा के सामने भक्ति में लीन होकर खड़ा होता हूँ तब उसमे और मुझ मे कोई अन्तर नही रहता.

— सन्त एकनाथ

ईश्वर की सच्ची भक्ति है—सब से प्रेम. ईश्वर की सच्ची पूजा है—सब की सेवा.

— रामदास

ईश्वर के साथ जिसकी दोस्ती हुई, उसे दुनिया की सम्पत्ति के साथ तो दुश्मनी हुई ही समझ लेनी चाहिए.

— हय हया

बिना भक्ति के ज्ञान ऐसा है जैसा वह खेत जोता तो गया मगर बोया नही गया.

— संस्कृत सूक्ति

मुक्ति की कारण-सामग्री मे भक्ति ही सब से बढ़कर है. अपने स्वरूप का अनुसधान ही भक्ति है.

— शकराचार्य

भलाई

बुरे आदमी के साथ भी भलाई ही करनी चाहिए. एक टुकड़ा रोटी डाल कर कुत्ते का मुंह बन्द कर देना ही अच्छा.

— सादी

क्रोधी के प्रति क्षमा और वैरी के प्रति प्रेम करना चाहिए. बुरा करने वाले के साथ भी भलाई करनी चाहिए.

— उड़िया बाबा

भलाई चाहना पशुता है, भलाई करना मानवता है, भला होना दिव्यता है.

— मार्टिनी

अगर तुम कोई अच्छा काम करने वाले हो तो उसे अभी करो, अगर तुम नीच काम करने वाले हो तो कल तक ठहरो.

— अज्ञात

भलाई जितनी ज्यादा दी जाती है उतनी ही ज्यादा मिलती है.

— मिल्टन

नेक आदमी का बुरा नही हो सकता, न तो इस जिन्दगी मे, न मरने के बाद.

— सुकरात

भावना

वाणी विलास से विचार अधिक गहराई पर है; विचार से भावना अधिक गहराई पर है

— फ्रैंच

जिस मनुष्य को भावना का उफान आता है वह 'हिस्टिरिकल' है.

— गांधी

अगर विचार रूप है तो भावना रग है.

— एमर्सन

राम की आग घर-घर में व्याप्त है, लेकिन हृदय की चमक न लगने से धुआ हो कर रह जाती है.

— कबीर

जवानी कलम इस्तेमाल करने से पहले उसे दिल की रोशनाई मे डुबो लेना चाहिए.

— इटालियन कहावत

सब से महान् भावना है—अपने को बिल्कुल भूल जाना.

— रस्किन

भूल

हम यह सोचने की गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नही सकते.

— गांधी

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे तो उसकी छोटी से छोटी गल्ती भी उसे कुछ शिक्षा दे सकती है.

— अमर वाणी

भूल कर के आदमी सीखता तो है, पर इसका यह मतलब नहीं कि जीवन भर भूल ही करता जाए और कहे कि हम सीख रहे है.

— गाधी

ज्ञानी आदमी दूसरों की भूलों से अपनी भूलें सुधारता है.

— अज्ञात

ॐ

जो कोशिश करता है उससे भूलें भी होती है

— गेटे

ॐ

जिस प्रकार जहाज का कप्तान अपनी नोट बुक मे यात्रा तथा जहाज सम्बन्धी बातें लिखता है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को निष्पक्ष भाव से प्रतिदिन अपने दैनिक कार्यक्रम के बारे मे लिखना चाहिए और अगले दिन उसे सोचना चाहिए कि उसके काम में जो त्रुटियां और दोष रह गये है उनके दूर करने मे वह कहाँ तक सफल हुआ है ?

— गांधी

ॐ

गलती हर इन्सान से होती है, लेकिन जब इन्सान अपनी गलती को छिपाता है या उस पर मुलम्मा चढाने के लिए और भूठ बोलता है तो वह खतरनाक बन जाती है

— गांधी

• भोग

संसार के भोगों में फँसे रहने वाले लोग बार-बार जन्म-मरण करते हैं.

— आचरांग

भोगी संसार में भ्रमण करता है, अभोगी संसार-बन्धन से मुक्त हो जाता है.

– उत्तराध्ययन सूत्र

भोग किंपाक फल के समान दुखदाई है.

– महावीर

भोग पहले अच्छे लगते हैं, बाद में दुख देते है.

– संस्कृत सूक्ति

वैषयिकता से बच, क्योंकि वैषयिकता पश्चाताप की जननी है.

– सोलन

भोग-विलास एक आग है, दोजख की आग है उससे बचते रहना, उसे तेज मत करना. तुम उसकी गर्मी सहने की ताकत कहाँ से लाओगे ! इसलिए उस पर सब्र का ठण्डा पानी छिड़क देना.

शेखसादी

हमने भोग नही भोगे, भोगो ने ही हमे भोग लिया; हमने तप नही किया, हम ही तप गये; हमने काल नही गुजारा, काल ने ही हमे खत्म कर दिया; हमारी तृष्णा जीर्ण नही हुई, हम ही जीर्ण हो गये.

– भर्तृहरि

महात्मा

जिसके मन, वचन और कर्म मे मैल नही वही महात्मा है.

– अज्ञात

महात्मा मन से एक, वचन से एक, कर्म से एक होते है. दुरात्मा मन से, वचन से, और कर्म से भिन्न भिन्न होते है.

– महाभारत

ॐ

जो मनुष्य अपने छोटे से छोटे दोष या पाप को वडा भयकर समझता है वह साधु है, महात्मा है.

– अज्ञात

ॐ

मन से भगवान का स्मरण वना रहे और मर्यादा का उल्लंघन न हो, यही महात्मापन है.

– श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

ॐ

ईश्वर की प्रार्थना से पवित्र हृदय को जो उसी स्थिति में, उस प्रभु के चरणो में अर्पित कर देता है, अपनी दूसरी सब सभाल भी उस प्रभु पर ही छोड देता है और खुद उसके ध्यान—भजन मे रत रहता है, वही सच्चा महात्मा है.

– रबिया

ॐ

केवल सिर मुडवाने से कोई श्रमण नही होता, ओङ्कार वोलने से ही ब्राह्मण नही होता, निरे अरण्य मे रहने से कोई मुनि नही कहलाता और न ही वल्कल धारण करने से कोई तापस होता है.

– भ. महावीर

ॐ

जो सदा क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार कषायो का परित्याग करता है वही भिक्षु कहलाता है, वही महात्मा कहलाता है.

– भ महावीर

मरण

मैं तो एक ही मरण जानता हूँ, वह है जीव-भाव का ईश्वर के चरणो मे समर्पण.

— ज्ञानेश्वर

❧

अल्ला के रास्ते चलते हुए जो कत्ल हो जाँय उन्हे मरा हुआ कभी नही समझना. वे दिखाई नही देते मगर जिन्दा हैं.

— कुरान

❧

धीर पुरुष ऐसा देह नही चाहता जिसमे कुमारावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था प्राप्त हो.

— गीता

❧

मरना ही शरीर-धारियो की प्रकृति है और जीवित रहना ही विकृति है. घड़ी भर की सांस लेना गनीमत समझना चाहिए.

— कालिदास

❧

मरना तो सब को है, मगर मरने से डरने का काम कायर का है.

— संत तुकाराम

❧

मरने वाले इस तरह मर, जीने वाले इस तरह जी।
कुछ सबक दे जाए तेरी, जिन्दगी और वन्दगी ॥

— अज्ञात

मन

जिस तरह टूटे छप्पर में बारिश घुस जाती है उसी तरह गाफिल मन में तृष्णा दाखिल हो जाती है.

— ज्ञान गगा

मन को हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हजार हानियो से बचोगे और दीर्घ जीवन पाओगे.

— शेक्सपियर

मन सब कुछ है. हम जो कुछ सोचते हैं, हो जाते है.

— बुद्ध

अपने मन लाडले बच्चो की तरह है. लाडले बच्चे जैसे हमेशा अतृप्त रहते है, उसी तरह हमारे मन हमेशा अतृप्त रहते है इसलिए मन का लाड कम कर के उसे दबा कर रखना चाहिए

— विवेकानन्द

मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है.

— अज्ञात

मन के बहुत से रग हैं जो कि क्षण-क्षण बदलते रहते हैं. एक रग मे रगा कोई विरला ही होता है.

— कबीर

मन तीन तरह का होता है—पहाड़ की तरह अचल, पेड़ की तरह चलायमान, तिनके की तरह हर हवा के हर झोंके पर उड़ने वाला.

— अज्ञात

माया

मायावी व्यक्ति मिथ्या दृष्टि होता है.

— भ. महावीर

मायावी व्यक्ति सिर्फ देखने में ही अच्छा लगता है.

— पैरी किल्स

कपटी अर्थात् मायावी व्यक्ति कब्र की तरह होता है. कब्र ऊपर से ढकी हुई व पवित्र होती है, किन्तु खोद कर देखेंगे तो उस मे सड़ी-गली हड्डियाँ मिलेंगी.

— एक विचारक

धूर्त आदमी को न आदमी पहचान सकता है, न फरिश्ता; उसे तो सिर्फ भगवान जानते है.

— जॉन मिल्टन

दिखावटी प्रेम, झूठी भावनाएँ और कृत्रिम भावुकता यह सब ईश्वर के प्रति अपमान है.

— रामतीर्थ

जो सोचता कुछ और है और कहता कुछ और है, मेरा दिल उससे ऐसी घृणा करता है जैसी नरक-कुण्ड से.

— पोप

❀

वह सभा नही है जिस मे वृद्ध पुरुष न हो; वे वृद्ध नही जो धर्म ही की बात नही बोलते, वह धर्म नही है जिसमे सत्य नही और न वह सत्य है जो कि छल से मुक्त हो.

— महाभारत

❀

धोखा देकर दगाबाजी से धन जमा करना बस-ऐसा होता है जैसा कि मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी भर कर रखना.

— तिरुवल्लुवर

मानव

सिर्फ मानव ही रोता हुआ जन्मता है, शिकायतें करता हुआ जीता है, निराश होकर मरता है

— सर वाल्टर

❀

मानव की मानव के प्रति अमानवता असख्यो को रुला देती है.

— बर्न्स

❀

मानव जब पशु बन जाता है उस समय वह पशु से भी बदतर होता है.

— टैगोर

ज्यो ज्यो मानव बूढा होता जाता है, त्यो त्यो जीवन से प्रेम और मृत्यु से भय होता जाता है.

— नेहरू

यदि तुम पढ़ना जानते हो तो प्रत्येक मानव स्वयं में एक पूर्ण ग्रन्थ है

— चैनिंग

अत्यधिक विरोधी परिस्थितियों मे ही मानव की परीक्षा होती है

— गाधी

मानवता

तेरे साथ अन्याय करे उसे तू क्षमा कर दे; जो तुझे अपने से काट कर अलग कर दे उसे तू मेल कर; तेरे साथ बुराई करे उसके साथ तू भलाई कर और सदा सच्ची बात कह चाहे वह तेरे खिलाफ ही क्यों न जाती हो.

— मोहम्मद सा.

किसी के अपराध को भूलना और क्षमा कर देना मानवता है.

— गांधी

मानवता मानव हृदय में खिलने वाला सुन्दरतम पुष्प है.

— जेम्स हेलिन

चिड़ियो की तरह हवा मे उड़ना और मछलियो की तरह पानी में तैरना सीखने के बाद अब हमे इन्सानो की तरह जमीन पर चलना सीखना है.

— डॉ. राधाकृष्णन

❧

मैं अपने देश को अपने कुटुम्ब से ज्यादा प्यार करता हूँ; लेकिन मानव जाति मुझे अपने से भी ज्यादा प्यारी है.

— फेनेनल

❧

मानवता माने दूसरो के प्रति समभाव.

— नाथजी

❧

हमारी सच्ची राष्ट्रीयता ही मानवता है.

— ऐच. जी. वेल्स

❧

स्वार्थमय जीवन पशुता की निशानी है, परमार्थमय जीवन मनुष्यता की.

— ज्ञान गगा

❧

वदला लेना नही, देना मानवता है.

— गांधी

मित्रता

सब जीवो के साथ मेरी मित्रता है, किसी के साथ भी मेरा वैर-विरोध नही है.

— जैन दर्शन

विदाई से बढ कर कोई दुख नही है और नई मैत्री से बढ कर कोई आनन्द नही है.

— अरस्तू

मित्रो के सामने पैरो में बेड़ियाँ पड़ी हुई अच्छी हैं, लेकिन बेगानो के साथ फुलवाडी का निवास भी बुरा है.

— शेख सादी

जो मित्र मुह पर तो मीठी-मीठी बातें करे और पीठ पीछे काम बिगाड़े, उसको उस घडे की भाति त्याग देना चाहिए जिसके मुख पर तो दूध और भीतर विष भरा रहता है.

— चाणक्य

जब मिले तो मित्र का आदर करो, पीठ पीछे प्रशसा करो और आवश्यकता पडने पर निस्सकोच सहायता करो.

— अरस्तू

मित्र

सच्चे मित्र हीरो की तरह कीमती और दुर्लभ है झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियो की तरह हर जगह मिलते हैं.

— अज्ञात

वह मित्र नही जो मित्र को सहायता नही देता.

— ऋग्वेद

सच्चा मित्र वह है जो मुह पर चाहे कडवी बात कहे पर पीछे सदैव बड़ाई करे.

— हरिभाऊ उपाध्याय

❧

सच्चा मित्र वह है जो दर्पण की तरह तुम्हारे दोषो को तुम्हे दर्शावे. जो तुम्हारे अवगुणो को गुण बतावे वह तो खुशामदी है.

— ग़ज़ाली

❧

जो तेरे वास्तविक मित्र है, वह तेरी जरूरत के वक्त तुझे मदद देगा.

— शेक्सपियर

❧

दुष्चरित्र आदमी से न दोस्ती करो, न जान-पहिचान. गरम कोयला जलाता है, ठडा हाथ काले करता है.

— हितोपदेश

❧

मित्र का हँसी-मजाक में भी जी नही दुखाना चाहिए.

— अज्ञात

❧

मित्र खूब दूर रहना चाहते है. वे एक दूसरे से मिलने की अपेक्षा अलग रहना पसन्द करते है.

— थोरो

❧

मित्रों के बिना कोई भी जीना पसन्द नही करेगा, चाहे उसके पास बाकी सब अच्छी चीजें क्यो न हों.

— अरस्तू

मुक्ति

जितना कष्ट यह जीव संसारी चीजो को पाने में उठाता है, उसका कुछ अंश भी आत्मोद्धार में उठाता तो कभी का मुक्त हो गया होता.

— जैनाचार्य

मैं कब मुक्त होऊँगा ? जब 'मैं' खत्म हो जायगा.

— स्वामी रामतीर्थ

हे पुरुष ! तू अपनी आत्मा को आशा-तृष्णा से दूर रख जिससे तू मुक्ति पायेगा. बन्धन और मोक्ष दोनों तेरे अन्दर मौजूद हैं.

— अज्ञात

मुक्ति ज्ञान से मिलती है, सर मुडा लेने से नही. साल में भेड़ दो बार मूडी जाती है.

— अज्ञात

तू खुदा को भी पाना चाहता है और इस जलील दुनियाँ को भी हासिल करना चाहता है, यह गैर-मुमकिन है.

— एक सूफी

चित्त की शांति ही सच्ची मुक्ति है.

— रमण महर्षि

इच्छा-रहितता ही मुक्ति है, और सासारिक कामना ही बंधन है.

— योगवासिष्ठ

३

मुक्ति के लिए किसी रीति-रिवाज की जरूरत नही, जरूरत अपने दिल से मोह, डर और गुस्से को निकाल कर उसे एक परमेश्वर की तरफ लगाने की है.

— गीता

मोक्ष

सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र ही मोक्ष का मार्ग है.

— जैन दर्शन

२

किये हुए कर्म का क्षय ही मोक्ष है.

— तत्वार्थ सूत्र

२

ज्ञान, भक्ति और कर्म के मिलने से आत्मा परमात्म-पद प्राप्त करता है.

— अरविन्द घोष

२

हर एक को अपना मोक्ष आप बनाना होता है. उसे अपनी राह भी आप बनानी होती है.

— जैनेन्द्र कुमार

वही आदमी ईश्वर तक पहुँच सकता है जो किसी भी प्राणी से वैर या दुश्मनी नही रखता हो.

— गीता

आत्मज्ञान के विना मोक्ष नही मिलता.

— अज्ञात

मोक्ष क्या है ? अविद्या की निवृत्ति.

— शंकराचार्य

तृष्णा को खत्म कर देना ही मोक्ष है.

— महाभारत

गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं है. सत्य से बढ़ कर कोई तप नही है. शांति के समान कोई वन्धु नही है, मोक्ष से बड़ा कोई लाभ नहीं है.

— अज्ञात

मोह

मोह की जंजीर सिवाय वैराग्य के किसी चीज से नहीं तोड़ी जा सकती.

— अज्ञात

जिस तरह पानी से निकल कर जमीन पर आ पड़ने पर मछली तड़-फड़ाती है, उसी तरह यह जीव राग, द्वेष और मोह के फंदे मे पड़ा तड़फता है .

— बुद्ध

जिस मोह के कारण आदमी क्षणिक चीज को शाश्वत मान लेता है उस मोह से बड़ी बेवकूफी क्या होगी ?

— अज्ञात

चेतना-सरीखे चेतन हो कर जड़ का मोह रखना किंवा जडवत् होना, इसे क्या कहा जाय ?

— विनोबा

यह जीव मोहवशात् दुख को सुख और सुख को दुख मान बैठा है. यही कारण है कि इसे मोक्ष नहीं मिल रहा है.

— मुनि रामसिंह

राग और द्वेष से मोह की उत्पत्ति होती है.

— जैन दर्शन

मौन

मौन के वृक्ष पर शान्ति का फल लगता है.

— अरबी कहावत

प्रति दिन मैं मौन का महत्त्व देखता हूं. सब के लिए अच्छा है, लेकिन जो कामों में डूबा रहता है, उसके लिए तो मौन सुवर्ण है.

— गांधी

वाचालता चाँदी है, मौन सोना; वाचालता मनुष्योचित है, मौन देवोचित.

— जर्मन कहावत

❧

मौन नीद की तरह है; वह विवेक को ताजा करता है.

— वेकन

❧

कोयल ने अच्छा किया कि वह बादलो के आने पर खामोश रही. जहाँ मेढ़क टर्राते है वहाँ मौन ही शोभा देता है.

— अज्ञात

❧

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूँ कि मौन सर्वोत्तम भाषण है. अगर बोलना चाहिए तो कम से कम बोलो, एक शब्द से काम चले तो दो नही.

— गांधी

मृत्यु

मृत्यु से डरना क्यो ? यह तो जीवन का सर्वोच्च साहसिक अभियान है.

— चार्ल्स फ्राहमैन

❧

मृत्यु मे आतंक नहीं होता, बल्कि मृत्यु तो एक प्रसन्नतापूर्ण निद्रा है जिसके पश्चात् जागरण का आगमन होता है.

— गांधी

ईश्वर ने ही जीवन दिया था, ईश्वर ने ही जीवन ले लिया. धन्य है वह ईश्वर.

— बाइबिल

❀

जरा-सी निद्रा, जरा-सी खुमारी और निद्रा के उपक्रम में अंगो का संकोचन —यही मृत्यु है.

— बाइबिल

❀

ईश्वर की उंगली ने उसका कोमल स्पर्श किया और वह निद्रालीन हो गया.

— टेनीसन

❀

मृत्यु से अधिक सुन्दर और कोई घटना नहीं हो सकती.

— वाल्ट व्हिटमैन

❀

मृत्यु से कुछ समय पूर्व स्मृति बहुत साफ हो जाती है. जन्मभर की घटनाएँ एक-एक कर के सामने आती हैं; सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं.

— गुलेरी

❀

मृत्यु तो मित्र है. क्षणभंगुर शरीर के लिए मोह कैसा ? चीनी मिट्टी के बर्तनों से भी हम कमजोर हैं. मृत्यु का भय अपने दिल से निकाल देना चाहिए और देह रहते हुए उसे सेवा में घिस डालना चाहिए

— गांधी

षष्ठं अध्याय

– य

- यश
- युद्ध
- योग
- लोभ
- विवेक
- विश्वास
- विचार
- विश्व
- विद्या
- व्यसन
- व्यवहार
- शत्रु
- शांति
- शिक्षा
- शोक
- सत्य
- सत
- श्रद्धा
- सरलता
- सफलता
- सत्संग
- सभ्यता
- समय
- संगठन
- संतोष
- संयम
- संग्रह
- स्वर्ग
- साधना
- सुख
- हर्ष
- हिंसा
- क्षमा
- ज्ञान

• यश

जिन्होने यश पाने का कोई काम नही किया वे जीवित रह कर के भी मरे हुए है; जिन्होने विद्या प्राप्त नही की वे आँखें रहते हुए अन्धे है. जो किसी को कभी कुछ नही देते वे पुरुषतत्त्व से हीन है और जो कर्म-शील नहीं है उनकी दशा वस्तुत: सोचनीय है.

— विदुर

यदि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी बडाई करें तो अपने मुह से अपनी बड़ाई मत करो.

— अज्ञात

धन्य है वह मनुष्य जिसकी ख्याति उसकी वास्तविकता से अधिक प्रकाश-मान नही है.

— रविन्द्रनाथ ठाकुर

यशस्वी होने का सब से छोटा रास्ता अन्तरात्मा के अनुसार चलना है

— होम

मानव जाति के सुख सवर्धन के प्रयत्न करने से ही सच्चा और स्थायी यश मिलता है.

— चार्ल्स सुमनेर

किसी ने एक बिच्छू से पूछा—'तू जाडे में बाहर क्यो नही निकलता ?' उसने जवाब दिया—'मैं गरमी मे क्या नाम पैदा करता हूँ जो जाड़े मे बाहर निकलू !'

— सादी

विना किसी शुभ्र गुण के यश नहीं मिलता.

— अज्ञात

युद्ध

ससार में आज तक अच्छा युद्ध और बुरी शान्ति कभी नही हुई.

— फ्रैंकलिन

युद्ध विनाश विद्या का नाम है.

— जॉन एस. सी. एबट

युद्ध मनुष्यता के लिए सब से भयानक महामारी है; यह धर्म को मिटा देता है, राष्ट्रो का विनाश कर देता है और परिवारो का विध्वस कर देता है.

— मार्टिन लूथर

जब तक लोग कटिबद्ध होकर युद्ध का खात्मा नही कर डालते हैं, यह निश्चित है कि युद्ध ही उनका खात्मा कर डालेगा.

— स्वासन न्यूसेट

पता नही, युद्ध मनुष्यो को इतना प्रिय क्यो है, जब कि उसे मनुष्य एकदम प्रिय नही है ?

— इमर्सन

जब आदमी में अन्तर्युद्ध शुरू हो जाता है तब उसकी कुछ कीमत हो जाती है.

— ब्राउनिंग

प्रो० आईस्टाइन से किसी ने पूछा कि 'आपके विचार से तृतीय विश्व-युद्ध कौन से शस्त्रो से लड़ा जायगा ?' उत्तर देते हुए आइस्टाइन ने कहा—'मैं तृतीय विश्वयुद्ध के सम्बन्ध मे कुछ नही कह सकता, हाँ इतना अवश्य कहूँगा कि उसके बाद भी कोई युद्ध हुआ तो वह अवश्य ही लाठियो से लड़ा जायेगा.

— अज्ञात

योग

जो कुछ अन्तराय बन कर आये उसे विदा कर देना होगा—योग की यह एक प्रधान शर्त है.

— अरविन्द घोष

योग माने समत्व-आत्मा की शान्ति और आनन्द की अविचल स्थिति.

— स्वामी रामदास

योग माने जोड़, माने जीव और शिव को एक कर देना.

— अज्ञात

चित्त वृत्ति के निरोध को योग कहते है और वह अभ्यास और वैराग्य से होता है.

— पातञ्जल सूत्र

हमारे दिल में उठती हुई तरंगो पर अकुश रखना, उसे दवा देना, यह योग हुआ.

— गांधी

लोभ

जिसे मोह नही, उसे दुख नहीं. जिसे तृष्णा नहीं, उसे मोह नही. जिसे लोभ नही, उसे तृष्णा नहीं और जिसके पास लोभ करने योग्य कोई पदार्थ-सग्रह नही, उसमे लोभ भी नहीं.

— भ महावीर

ज्यों ज्यो लाभ होता है, त्यो-त्यो लोभ भी वढ़ता जाता है.

— भ. महावीर

चावल और जौ आदि धान्यो तथा सुवर्ण और पशुओं से परिपूर्ण यह समूची पृथ्वी भी लोभी को तृप्त नहीं कर सकती.

— भ. महावीर

जैसे ओस से कुआ नही भरता उसी तरह धन से लालची की आखें नहीं भरतीं.

— सादी

आदमी लोभ को प्याला पीकर बे-अक्ल और दीवाना हो जाता है.

— सादी

दुनिया मे अत्याचार, अनीति, अधर्म, असमाधान इन सब का कारण यह है कि आदमी ज्यादा लोभी हो गया है.

— श्री ब्रह्मचैतन्य

लोभ नागिनी ने विष फूका, शुरू हो गई चोरी।
लूट मार शोषण प्रहार, छीनाझपटी बरजोरी ॥

— दिनकर

महान् शास्त्रज्ञ, बहुश्रुत सशयो को छेदने वाला पण्डित भी लोभ के वश हो कर दुखी होता है.

— नीति

विवेक

विवेक से चले, विवेक से खड़ा हो, विवेक से बैठे, विवेक से सोये, विवेक से खाये, और विवेक से ही बोले, तो पाप-कर्म का बधन नही होता.

— दशवैकालिक

हंस दूध निकाल लेता है और उस मे मिले हुए पानी को छोड़ देता है.

— कालिदास

विवेक का पहला काम मिथ्यात्व को पहिचानना है, दूसरा सत्य को जानना.

— ज्ञान गंगा

❧

विवेक न सोना है, न चांदी, न शोहरत, न दौलत, न तन्दुरुस्ती, न ताकत, न खूबसूरती.

— प्लुटार्क

❧

आत्मा के लिए विवेक वैसा ही है जैसे शरीर के लिए स्वास्थ्य.

— रोची

❧

भावुकता एक क्षणिक वेग है, तूफान है, बाढ है, विवेक सतत समान प्रवाह है.

— ज्ञान गंगा

❧

मन के हाथी को विवेक के अंकुश मे रखो.

— रामकृष्ण परमहस

❧

मन्द मति सम्पत्ति से सुखी होते है, विपत्ति से दुखी, किन्तु विवेकियो के लिए न कुछ सम्पत्ति है, न कुछ विपत्ति.

— अज्ञात

❧

विवेकशून्य स्त्री मे सौन्दर्य ऐसा है, जैसे शूकरी की नाक में रत्न-जटित नथुनी.

— वाइविल

❧

फूल लेलो, काटे छोड़ दो.

— इटालियन कहावत

ज्ञान खजाना है, विवेक उसकी कुञ्जी.

— कैलथम

❧

विवेक मुक्ति का साधन है.

— अज्ञात

विश्वास

जो एक बार विश्वासघात कर चुका हो उसका विश्वास न करो.

— शेक्सपियर

❧

अगर तुम विश्वास मे महान् नही हो तो किसी चीज मे महान् नही हो सकते.

— जैकोवी

❧

विश्वास रखो, तुम्हारी प्रार्थना का जवाब जरूर मिलेगा.

— लाँग फैलो

❧

विश्वास जीवन है, संशय मौत है.

— रामकृष्ण परमहस

❧

दूसरो को मारने के लिए ढालो और तलवारों की जरूरत होती है, मगर खुद को मारने के लिए एक पिन ही काफी है; इसी तरह दूसरे को सिखाने के लिए बहुत से शास्त्रो और विज्ञानो के अध्ययन की आवश्यकता

होती है, मगर आत्म-प्रकाश के लिए एक ही सिद्धांत-सूत्र में दृढ़ विश्वास का होना काफी है.

— रामकृष्ण परमहंस

हम विश्वास के आधार पर चलते है, सृष्टि के आधार पर नही.

— वाइविल

विना विश्वास के यह सारी सृष्टि एक क्षण मे नष्ट हो जायेगी. विश्वास कोई नाजुक फूल नही है, जो जरा से तूफानी मौसम में कुम्हला जाय. वह तो अपरिवर्तनशील हिमालय के समान है. वड़े से वड़ा तूफान उसे नही हिला सकता.

— गांधी

जो तुम पर विश्वास करते हैं उन्हें ठगने में क्या वहादुरी है ?

— अज्ञात

विचार

किसी के ख्यालो को हमने ग्राह्य तो किया, पर पचा न सके; वुद्धि से उनको ग्रहण कर लिया पर अमल नही किया, तो वह एक प्रकार का अजीर्ण ही है, वुद्धि का विलास है. विचारो का अजीर्ण भोजन के अजीर्ण से कहीं वुरा है भोजन के अजीर्ण के लिए तो दवा है, पर विचारो का अजीर्ण आत्मा को विगाड़ देता है.

— गाधी

मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बन जाता है. इसलिए हमे हमेशा उस अनन्त का चिन्तन करना चाहिए.

– एनी

ज्योही आपने अपनी निजी विचारधारा की पकड़ खोई कि आप की कीमत खत्म हुई.

– अज्ञात

विचार मे अपार शक्ति होती है. एक स्त्री ३३ वर्ष की उम्र तक भी १६ वर्ष की युवती बनी रही. चिन्तातुर रहने से एक आदमी के रात भर मे सारे स्याह बाल सफेद हो गये.

– एक विचारक

आदमी अच्छा करे कि अपनी जेब मे कागज पेंसिल रखे और वक्त के विचारो को तुरन्त लिख डाले. जो विचार अनायास आते हैं वे अक्सर सब से ज्यादा कीमती होते हैं, उन्हे सभाल कर रखना चाहिए, क्योंकि वे बार-बार नही आते.

– बेकन

मनुष्य मे जैसे विचार उत्पन्न होते हैं, वैसे ही वह काम कर सकता है.

– अरविन्द घोष

जिस विचार को मैंने पचा लिया वह मेरा हो गया. मैंने केला खाया और पचा लिया, उसका मेरे शरीर मे रक्त, मास बन गया, फिर केला कहाँ रहा ?

– विनोबा

विना विचार के सीखना मेहनत वर्वाद करना है.

— कन्फ्यूशियस

विश्व

सम्पूर्ण विश्व एक मंच है और स्त्री और पुरुष इस पर अभिनय करने वाले पात्र है.

— शेक्सपियर

मृत्यु और कर के अतिरिक्त इस विश्व मे कुछ भी निश्चित नहीं है.

— फ्रैंकलिन

जिस प्रकार हम ईर्ष्या एवं कुटिलता के द्वारा ससार को नरक वना सकते हैं, वैसे ही प्रेम के द्वारा इसे स्वर्ग भी वनाया जा सकता है.

— अनाम

अच्छी वुरी सभी प्रकृतियों के व्यक्तियो के सम्मिलन से विश्व की रचना होती है.

— डोगलास जेरोल्ड

इस विश्व में राष्ट्र उसी प्रकार है जिस प्रकार वाल्टी में एक विन्दु.

— वाइविल

आकेश के अन्य सुन्दर लोको की भाति हमारा विश्व भी सुन्दर है. यदि हम अपने कर्त्तव्य मात्र को कर पाते तो यह भी उन्ही की भाति प्रेम से परिपूर्ण हो जाता

— जीराल्ड मासी

विद्या

शास्त्र अनेक है, विद्याएँ भी बहुत है, समय बहुत थोडा है, विघ्न-बाधाएँ भी बहुत सी हैं, अतएव जैसे हस जल-मिश्रित दूध मे से जल को अलग करके केवल दूध को ले लेता है उसी प्रकार निरर्थक बातो को छोड़ कर जो कुछ सारभूत हो उसी को ग्रहण कर लेना चाहिए.

— चाणक्य

विद्या तेरा पिता और कर्म तेरी माता है. यह दोनो तुझे प्रिय होने चाहिए.

— अज्ञात

सुख चाहने वाले को विद्या और विद्या चाहने वाले को सुख कहाँ ?

— महाभारत

जो सीखता है मगर अपनी विद्या का उपयोग नहीं करता, वह किताबो से लदा लद्दू जानवर है.

— सादी

• व्यसन

शराब का एक प्याला मनुष्य को बुद्धिहीन बनाता है, दूसरा पागल बना देता है और तीसरा डुबो देता है अर्थात् चेतनाहीन बना देता है.

— शेक्सपियर

❧

आदमी पहले शराब पीता है, फिर शराब शराब को पीती है अर्थात् बार-बार पीने की इच्छा होती है और अन्त मे शराब आदमी को ही पीने लगती है

— अज्ञात

❧

शराब पीना और कुछ नही, केवल इच्छा से पागल बनना है.

— सेनेका

❧

तम्बाखू तो ऐसी चीज है कि कोई मुफ्त मे दे तो भी नही लेनी चाहिए लेकिन आज तम्बाखू के दाम देने पड़ते हैं और वह भी चावल से अधिक. जो तम्बाखू की कीमत चावल से ज्यादा देते हैं, उनकी अक्ल क्या होगी.

— विनोबा

❧

जो मनुष्य प्राणी-हिंसा करता है, मिथ्या भाषण करता है, पराये धन का अपहरण करता है और परस्त्री-गमन तथा मद्य-पान करता है—वह यही, इसी लोक मे अपनी जड खोदता है.

— धम्मपद

व्यवहार

दीपक को उसके प्रकाश के लिए धन्यवाद दो, परन्तु जो दीपक लिए हुए अंधेरे में स्थिरता और धैर्य के साथ खडा हुआ है, उसे मत भूल जाओ.

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दो बातें मानसिक दुर्बलता प्रकट करती हैं—एक तो बोलने के अवसर पर चुप रहना, दूसरे, चुप रहने के अवसर पर बोलना.

— शेखसादी

लकड़ी टेढी है, इसको सीधी करने का सब से अच्छा तरीका यह है कि उसके पास एक सीधी लकड़ी रखदी जाय. वाद-विवाद पर व्यर्थ की बकवास से यही तरीका ज्यादा कारगर है

— वाल्टेयर

कुछ लोगो की दशा चक्की के समान होती है. वे पीसते दूसरो को है और चिल्लाते स्वय हैं.

— रामकृष्ण परमहंस

दो विरोधियो के बीच मे इस प्रकार वास करो कि कभी यदि वे मित्र हो जाय तो तुम्हें लज्जित न होना पडे.

— शेखसादी

चिथड़े का निरादर मत करो क्योंकि उसने भी किसी समय किसी की लाज रखी थी.

— शेखसादी

❀

लोभी को धन देकर, क्रोधी को हाथ जोड़ कर, मूर्ख को उसकी इच्छा के अनुसार काम करने की सुविधा देकर और बुद्धिमान को यथार्थ बात बता कर वश में करना चाहिए.

— कुमार संभव

शत्रु

आत्मा ही शत्रु है, आत्मा ही मित्र है.

— भ. महावीर

❀

शत्रु कौन है ? अकर्मण्यता, उद्योगहीनता.

— शंकराचार्य

❀

यदि हम मे भगवद्भाव आ गया हो तो हमारा कोई शत्रु नही होगा.

— श्री ब्रह्मचैतन्य

❀

हर्ष और शोक ये दोनो ही शत्रु हैं.

— अज्ञात

इन तीन बातों को अपना शत्रु समझो—धन का लोभ, लोगों से मान पाने की लालसा और लोकप्रिय होने की आकांक्षा.

— अबु उस्मान

आदमी का खुद अपने से बड़ा कोई दुश्मन नहीं है.

— पेट्रार्क

यदि हम अपने शत्रुओं की गुप्त आत्म-कहानियाँ पढ़ें तो हमें प्रत्येक के जीवन में इतना दुख और शोक भरा मिलेगा कि फिर हमारे मन में उनके लिए जरा भी शत्रुभाव नहीं रहेगा.

— अज्ञात

शान्ति

शान्ति की विजय भी युद्ध की विजयों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है.

— मिल्टन

अगर तुम्हारा हृदय पवित्र है तो तुम्हारा आचरण भी सुन्दर होगा, अगर तुम्हारा आचरण सुन्दर है तो तुम्हारे परिवार में शान्ति रहेगी. यदि तुम्हारे परिवार में शान्ति रहेगी तो राष्ट्र में सुव्यवस्था होगी, और यदि राष्ट्र में सुव्यवस्था है तो संपूर्ण विश्व में शान्ति और सुख का साम्राज्य होगा.

— अज्ञात

मनुष्य की शान्ति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की टोच पर नही.

— गांधी

❧

अगर तुम्हे अपने में ही शान्ति नही मिलती तो बाहर उसकी तलाश व्यर्थ है.

— रोशे

❧

शान्ति को डडे के जोर से कायम नही किया जा सकता, वह तो केवल पारस्परिक समझौते से ही लाई जा सकती है.

— प्रो. आइस्टाइन

❧

जिसका चित्त शान्त है, उसे हर चीज मे ऐश का सामान नजर आता है.

— हिन्दुस्तानी कहावत

❧

शान्ति का प्रचार करने वाले धन्य है, क्योकि वे ही भगवान के पुत्र कहे जायेंगे.

— ईसा

❧

आनन्द उछलता-कूदता जाता है, शान्ति मुस्काती हुई चलती है.

— हरिभाऊ उपाध्याय

❧

तुम्हारा अन्तिम ध्येय शान्ति है. उसके प्राप्त करने के उपाय त्याग और सेवा है.

— स्वामी रामदास

शान्ति उत्तम है. मगर उस अवसर पर शान्ति अच्छी नही जब कि अत्याचार के तौर पर तू धूप मे बिठाया जाय.

— मुरार-बिन-सईद

शिक्षा

शिक्षा से तात्पर्य है मनुष्य और बच्चो के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा का सुन्दरतम रूप निखारना.

— गांधी

सच्ची शिक्षा के मानी हैं, ईश्वर की आखो से चीजो को देखना सीखना.

— स्वामी रामतीर्थ

ज्ञानी विवेक से सीखते है, साधारण मनुष्य अनुभव से; मूर्ख आवश्यकता से और पशु वृत्त से.

— सिसरो

अगर आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर एक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है.

— गाधी

किसी ने अरस्तू से पूछा—'अशिक्षितो से शिक्षित कितने श्रेष्ठ है ?' 'जितने मुर्दों से जिन्दे' उसने जवाब दिया.

— डायोजिनीज

सच्ची शिक्षा का पूर्ण ध्येय यह है कि न केवल वह सच्चाई को बताये बल्कि उस पर अमल भी कराये.

— मेरी बेफर ऐडी

शोक

जन्म के बाद मृत्यु, उत्थान के बाद पतन, संयोग के बाद वियोग, संचय के बाद क्षय निश्चित है. यह समझ कर ज्ञानी हर्ष और शोक के वशीभूत नही होते.

— महर्षि वेदव्यास

ज्ञानी पुरुष किसी के भी लिए शोक नही करता.

— गीता

यह कुछ भी नही रहेगा, फिर शोक किस के लिए किया जाय ?

— अज्ञात

पुत्र मरे या पति मरे, उसका शोक मिथ्या है और अज्ञान है.

— गाधी

हर सयोग के पिटारे मे वियोग का सर्प फन फैलाये बैठा है. अतः शोक करना व्यर्थ है.

— मुक्त चिन्तक

सत्य

वह सत्य भगवान है.

— प्रश्न व्याकरण सूत्र

❧

सत्य ही लोक में सार-तत्त्व है. यह महासमुद्र से भी अधिक गम्भीर है.

— प्रश्न व्याकरण सूत्र

❧

सत्य यश का मूल है, सत्य विश्वास का प्रधान कारण है, सत्य स्वर्ग का सार है, और सत्य ही सिद्धि का सोपान है.

— धर्म सग्रह

❧

जो सच बोलना नही जानता वह तो खोटा सिक्का है, उसकी कीमत ही नही.

— गाधी

❧

समय मूल्यवान अवश्य है किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है.

— डिज़ाराइली

❧

सत्य ही भगवान है और परम् शक्तिशाली.

— अज्ञात

❧

सत्य को यदि दबा भी दिया जाय तो वह स्वतः प्रकट हो उठेगा.

— ब्रायन्ट

सत्य एक विशाल वृक्ष है. उसकी ज्यो ज्यो सेवा की जाती है त्यो-त्यो उस मे अनेक फल आते हुए नजर आते हैं. उसका अन्त ही नही आता.

— गाधी

❑

मैं प्रेसीडेंट होने की अपेक्षा सत्य पर कायम रहना अधिक पसन्द करूँगा.

— हैनरी क्ले

❑

शेर का बच्चा शेर की भयकरता और हिंस्रता से नहीं डरता, किलक-किलक कर और उछल-उछल कर उस के गले से लिपटता है. उसी प्रकार सत्य का अनुयायी, सत्य की प्रचण्डता से नहीं घबराता, उल्टा उसके पास दौड़ कर जाता है.

— अज्ञात

❑

सत्य पर आरोप लगाया जा सकता है मगर उसे लज्जित नही किया जा सकता

— अज्ञात

❑

अगर तुम मेरे हाथो पर चाँद और सूरज को भी ला कर रख दो तो भी मैं सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होऊँगा.

— हजरत मुहम्मद

❑

बरतन का पानी चमकदार होता है, समुद्र का पानी काला-काला. लघु सत्य मे स्पष्ट शब्द होते है, महान् सत्य में महान् मौन.

— टैगोर

असत्य तो फूस के ढेर की तरह है. सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है.

—हरिभाऊ उपाध्याय

सत्य एक ही है दूसरा नही; सत्य के लिए बुद्धिमान लोग विवाद नहीं करते.

—बुद्ध

जो सत्य पर जान देता है उसे अपनी कब्र के लिए पवित्र भूमि हर जगह मिल जाती है.

—जर्मन कहावत

जैसे गायें अनेक रंगो की होती हैं लेकिन उसका दूध सफेद ही होता है, उसी तरह सत्य प्रवर्तको के कथन मे भाषा-भेद होता है, भाव-भेद नही.

— उपनिषद्

सत्य का मुह सोने के पात्र से ढँका हुआ है.

—यजुर्वेद

सत्य की सेवा के अतिरिक्त मुझे और किसी ईश्वर की सेवा नही करनी है.

—गाधी

संत

नेता की एक पार्टी होती है, संत अकेला होता है. नेता का बल उसका दल होता है, सत का बल उसका निर्मल दिल होता है.

—हरिभाऊ उपाध्याय

नेता यह देखता है कि इसने मेरी आज्ञा का पालन किया या नही, संत यह देखता है कि इसे मेरी बात जँची है या नहीं.

— हरिभाऊ उपाध्याय

❧

सन्त सौ युगो का शिक्षक होता है.

— एमर्सन

❧

सन्त सन्तपन नही छोडते, चाहे करोड़ो असन्त मिलें. चन्दन से साँप लिपटे रहते हैं, फिर भी वह शीतलता नही छोड़ता.

— कबीर

❧

सच्चा सत लोक-प्रतिष्ठा नही चाहता, और भगवान के दिये मे संतोष मानता है.

— सन्त पिंगल

❧

सन्त कम कहता है और कम कह कर भी सब के दिलो को खीच लेता है.

— रामदास

❧

सत स्वय तीर्थो को पवित्र करते हैं.

— मनुस्मृति

❧

हर आन खुशी हर आन हँसी,
हर वक्त अमीरी है बाबा।
आलम् मस्त फ़कीर हुए तो,
क्या दिलगीरी है बाबा ।।

— अज्ञात

श्रद्धा

श्रद्धा परम दुर्लभ है.

— जैन दर्शन

ॐ

विना विश्वास के यह सारी सृष्टि एक क्षण मे नष्ट हो जायगी. विश्वास कोई नाजुक फूल नही है, जो जरा से तूफानी मौसम मे कुम्हला जाय. वह अपरिवर्तनशील हिमालय के समान है. बड़े से बड़ा तूफान उसे नही हिला सकता

— गाधी

ॐ

श्रद्धा को प्राणो मे खीच कर जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है वही मुक्त ज्ञान कहलाता है. आज के अर्जित ज्ञान के वदी होने का कारण यही है कि जीवन के प्रति हमारी सारी श्रद्धा लुप्त हो चली है. श्रद्धा ज्ञान का प्राण-कोष है, उसके विना शव मात्र है

— गोपालाचार्य

सरलता

शुद्ध हृदय मे ही धर्म का टिकाव है.

छल और दम्भ से मुक्त आत्मा ही सम्यकत्व की प्रकाश-किरण पा सकता है.

— भ. महावीर

साधना के क्षेत्र में प्रगतिशील साधक वस्त्र मात्र का परित्याग कर अचेलत्व स्वीकार करता है. वर्षों तक तप, साधना कर के जिसने देह का खून सुखा दिया है, इतनी साधना के बावजूद भी यदि उसने माया की ग्रथी को न तोडा है तो उसे एक वार नही अनन्त वार गर्भ मे आना होगा. सरलता के अभाव मे उसकी कठोर साधना भी उसे भव परपरा से मुक्त नही कर सकती.

— सूत्रकृतांग सूत्र

सरलता ही धर्म है और कपट ही अधर्म है. सरल मनुष्य ही धर्मात्मा हो सकते हैं.

— महाभारत

सरलता भक्ति मार्ग का सोपान है.

— उडिया बाबा

मनुष्यो मे ऐसे लोग भी हैं जो अपने सरल जीवन मे ही संतुष्ट है. उनकी सवारी उनके दोनों पैर है और उनका ओढना-बिछौना मिट्टी है.

— युतनष्य

महात्माओ का मन, वचन और कर्म एक होता है.

— सुभाषित सचय

जहाँ सच्चाई है वही सरलता रहती है.

— जेम्स एलन

चालबाज और धूर्त को सब से ज्यादा व्याकुलता उस समय होती है जब कि उसका पासा किसी सीधे और सच्चे आदमी से पडता है.

— कोल्टन

सफलता

जब तक तुम हाथ बाध कर बैठे रहो तब तक सफलता की कतई आशा मत करो.

— सिम्मस

सफलता का रहस्य उद्देश्य की स्थिरता एव एकान्त निश्चय में है.

— बेंजामिन डिज्रायली

चलना आरम्भ करता है, वह सदा ही अवश्य सफल होता है; कारण यह है कि सफलता प्राप्ति के लिए जो बात आवश्यक है वह वही करता है.

— ईमाइलकोई

अपने आप पर भरोसा रखना और अपनी सारी शक्ति के साथ काम मे जुट जाना, दस में से नौ मर्तबा यह सारी सफलता का मूलाधार है.

— विल्सन

जिस काम को हाथ में लेते आप पहले हिचकिचाते रहे है, कतराते और इर्द-गिर्द घूमते रहे है, आज ही इसे उठा लीजिए और कर डालिए.

— अज्ञात

सत्संग

यदि फरिश्ता देवदूत भी शैतानो के साथ रहने लगे तो कुछ दिनो मे वह शैतान वन जायगा.

— शेख सादी

यदि तुम सदैव उनके साथ रहोगे जो लगडे हैं तो तुम स्वयं भी लगड़ाने लग जाओगे.

— लैटिन लोकोक्ति

मुझे बताइए, आप के संगी-साथी कौन है ? और मैं बता दूगा कि आप कौन हैं ?

— गेटे

चन्दन शीतल है चन्दन से चन्द्रमा अधिक शीतल है. चन्द्र और चन्दन से भी साधु पुरुषो की सगति अधिक शीतल होती है.

— अज्ञात

मूर्खों की संगति में ज्ञानी ऐसा है जैसे अन्धो के साथ कोई खूबसूरत लड़की.

– सादी

ॐ

गरम लोहे पर पड़ने से जल की बूंद का नाम भी नही रहता, वही कमल के पत्ते पर पड़ने से मोती-सी हो जाती है. और वही स्वाति नक्षत्र मे सीप में पड़ने से मोती हो जाती है. अधम, मध्यम और उत्तम गुण प्राय: संसर्ग से ही होते है

– भर्तृहरि

सभ्यता

सभ्यता उस आचरण का नाम है, जिस से मनुष्य अपना कर्तव्य पालन करता रहता है.

– गांधी

ॐ

आधुनिक सभ्यता का मैं घोर विरोधी रहा हूँ, और हूँ

– गांधी

ॐ

जो सभ्य पुरुष समाज से जितना ले उतना ही समाज को वापस कर दे, वह साधारण भद्र पुरुष कहा जाता है. जो सभ्य पुरुष समाज से जितना ले उससे अधिक उसे लौटा दे, वह विशिष्ट भद्र पुरुष है और जो शरीफ आदमी अपना समस्त जीवन समाज मे लगा दे और एवज़ मे समाज से

कुछ भी न चाहे, वह साधारण सभ्य एव भद्र पुरुप कहलाता है लेकिन पश्चिम का सभ्य पुरुष समाज से लेता ही लेता है, देने की तो वह इच्छा ही नही करता.

— जार्ज वर्नार्ड शा

❧

सभ्यता का अन्तिम सुफल यह हो कि हमें फुरसत के वक्त का उपयोग समझदारी से करना आ जाय.

— वरट्रॅड रसल

❧

नीति का पालन करना, अपने मन और इन्द्रियो को वश मे रखना और अपने को पहचानना सभ्यता है, इसके विरुद्ध जो है वह असभ्यता है.

— गाधी

समय

चिराग वुझ जाने पर तेल डालना, चोर भाग जाने पर सावधान होना, जवानी वीत जाने पर स्त्री-सहवास, पानी वह जाने पर वांध वाधना, ये सव व्यर्थ है. समय पर ही काम करना चाहिए.

— अज्ञात

❧

कोई ऐसी घडी नही वना सकता जो मेरे गुजरे हुए घण्टो को फिर से वजा दे.

— डिकेन्स

मैं अपने वक्त से पाव घण्टे पहले हाजिर रहा हूँ और इसने मुझे आदमी बना दिया है.

— नैल्सन

¤

सिवाय दिन रात के हर चीज खरीदी जा सकती है.

— फ्रासीसी कहावत

¤

पकड़ लिये जाने पर चिड़िया का चीखना फिजूल है

— फ्रांसीसी कहावत

¤

बच्चे के डूब जाने पर कुएँ के ढकने से क्या होता है ?

— एक लोकोक्ति

¤

समय वह बूढा न्यायाधीश है जो सब अपराधियो की परीक्षा करता है.

— शेक्सपियर

¤

साइप्रस के पास जो आदमी आते उनसे वह कहता—'थोडे मे कह दीजिए, समय बहुत कीमती है.'

— अज्ञात

¤

वर्तमान का हर क्षण अनन्त मूल्यवान है.

— गेटे

¤

नदी के प्रवाह में तुम दो बार नही नहा सकते. समय का प्रवाह भी ऐसा ही है, बह गया सो बह गया.

— हिरेक्लीटस

मैंने समय को नष्ट किया और समय मुझ को नष्ट कर रहा है.

— शेक्सपियर

❀

एक युग विशाल नगरो का निर्माण करता है, एक क्षण उसका विध्वंस कर देता है.

— सेनेका

❀

एक भी दिन को गँवा देने का अर्थ है—जीवन के एक अंश को व्यर्थ जाने देना, क्यो कि प्रत्येक दिन वास्तव मे थोड़ा-सा 'जीवन' ही है.

— शेक्सपियर

❀

ईश्वर एक बार एक ही क्षण देता है. और दूसरा क्षण देने से पहले उस क्षण को ले लेता है.

— स्वेट मार्टेन

संगठन

जिसमे फूट हो गई है और पक्ष-भेद हो गये है, ऐसा समाज किस काम का ? आत्म-प्रतिष्ठा और आत्मा की एकता की मूर्ति का समाज चाहिए. अलग रह कर जितना काम होता है, उससे सौ गुना संघ शक्ति से होता है.

— योगी अरविन्द

हमें संगठित होकर प्राण देने को प्रस्तुत होना चाहिए अन्यथा हम अलग-अलग तो प्राण दे ही बैठेंगे.

— फ्रैंकलिन

४

संगठन द्वारा छोटे छोटे राज्य भी उन्नत हो सकते हैं.

— अज्ञात

५

संगठन के द्वारा ही भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है.

— एक चिन्तक

संतोष

सच्चा संतोष इस बात पर निर्भर नहीं है कि हमारे पास क्या है, डायोजिनज के लिए एक नांद ही काफी बड़ी थी, लेकिन सिकन्दर के लिए एक दुनिया भी निहायत छोटी थी.

— कोल्टन

२

सब से अधिक प्राप्ति उसी को होती है जो संतुष्ट होता है

— शेक्सपियर

३

मेरा ताज मेरे दिल मे है, सिर पर नहीं; उस ताज को बिरले ही राजा पहन सकते है. वह है संतोष का ताज.

— शेक्सपियर

इन्सान अगर लालच को ठुकरा दे, तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल करले, क्योंकि सतोष ही इन्सान का माथा हमेशा ऊँचा रख सकता है.

— शेख सादी

धनवान कौन है ? जिसको सतोष है.

— ज्ञान गगा

वही सब से धनवान है जो सब से कम पर संतोष कर सकता है, क्योंकि सतोष ही सच्चा धन है.

— सुकरात

सतोष आनन्द है, शेष सब दुख है. इसलिए सतुष्ट रह, सन्तोष तुझे तार देगा.

— तुकाराम

लोभ दुख लाता है, सतोष आनन्द

— रामकृष्ण परमहस

संतुष्ट आदमी धनवान है, चाहे वह भूखा और नंगा हो परन्तु तृष्णावान भिखारी है, चाहे वह सारी दुनिया का मालिक हो.

— जाविदान-ए-खि़रद

ओ संतोष ! मुझे ऐश्वर्यशाली बना दे, क्योंकि कोई ऐश्वर्य तुझ से बढ़ कर नहीं है.

— सादी

संयम

जो अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को सतापों से बचाता है.

— बाइबिल

॥

सयम मे पहला कदम है विचारो का सयम

— गाधी

॥

संयमी को वन की क्या आवश्यकता ? और असंयमी को वन में जाने से क्या लाभ ! सयमी जहाँ भी रहे, उसके लिए वही वन है और वही आश्रम है

— भागवत

॥

सयम से कभी किसी की तन्दुरुस्ती नही विगडती

— गाधी

॥

सौन्दर्य शोभा पाता है शील से और शील शोभा पाता है संयम से.

— कवि नान्हालाल

॥

जो अपने ऊपर शासन नही करेगा, वह हमेशा दूसरो का गुलाम रहेगा.

— गेटे

॥

जिसका मन और वाणी सदा शुद्ध और सयत रहती है, वह वेदान्त शास्त्र के सब फलो को प्राप्त कर सकता है

— मनु

एक मनुष्य प्रति मास दस लाख गायो का दान करता हो और दूसरा मनुष्य कुछ भी नही करते हुए केवल सयम की आराधना करता हो, तो उस दान की अपेक्षा इस का यह सयम श्रेष्ठ है

— भ. महावीर

संयमी पुरुष सदा हिसा, झूठ, चोरी, अब्रह्म-सेवन, भोग-लिप्सा तथा लोभ का परित्याग करे.

— उत्तराध्ययन सूत्र

शहद की मक्खिया बड़े परिश्रम से शहद इकट्ठा करती हैं, पर उसे और ही कोई ले जाते हैं. सग्रह का नतीजा नाश है

— भागवत

ज्ञान अगर छिपाया जाय और खजाना अगर दबा कर रखा जाय तो इन दोनो से क्या फायदा ?

— एकलस

सन्यासी एक दिन का संग्रह करे, गृहस्थ तीन दिन का; आप के पास तीन दिन के लिए खाने को हो तो फिर जरा भी फिक्र न करें.

— श्री ब्रह्मचैतन्य

संग्रह करो तो माता की तरह करो—माता रोटियाँ बना बना कर कटोरदान में जमा करती है. किन्तु समय पर परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यो को एक भाव से बाँट देती है.

— अज्ञात

स्वर्ग

हम पृथ्वी से तो परिचित हैं पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिल्कुल अपरिचित है.

— गांधी

❧

स्वर्ग की अच्छी तरह कद्र कर सकने के लिए आदमी के लिए अच्छा है कि वह करीब पन्द्रह मिनट के लिए नरक मे रह ले.

— चार्लेटन

❧

नरक पर खुशियो का परदा है, स्वर्ग पर दुखो और कठिनाइयो का.

— मुहम्मद

❧

स्वर्ग का अर्थ है—ईश्वर में लीन हो जाना.

— कन्फ्यूशियस

❧

स्वर्ग मे दासता करने की अपेक्षा नरक मे शासन करना कही श्रेयस्कर है.

— मिल्टन

❧

पृथ्वी पर कोई ऐसा दुख नही है, स्वर्ग जिसका निवारण न कर सके.

— मूर

❧

बोलना नही बल्कि चलना हमें स्वर्ग पहुँचायेगा.

— हैनरी

वहुत से लोग जितनी मेहनत से नरक में जाते हैं, उस से आधी में स्वर्ग में जा सकते है.

– एमर्सन

२

ये दो पुरुप स्वर्ग से भी ऊँचा स्थान पाते हैं—समर्थ होने पर भी क्षमा करने वाला और निर्धन होने पर भी दान देने वाला.

– सत विदुर

३

स्वर्ग की सड़क है, पर कोई उस पर नही चलता. नरक का कोई दरवाजा नही है, लेकिन लोग छेद कर के उसमें घुस जाना चाहते हैं.

– चीनी कहावत

साधना

नौका जल मे रह सकती है किन्तु जल नौका में नही रहना चाहिए. उसी प्रकार साधक संसार मे रहे किन्तु ससार का माया-मोह सावक के मन में न रहे.

– रामकृष्ण परमहंस

२

जिस प्रकार पीतल के पात्र को यदि नित्य स्वच्छ न किया जाय तो वह अपनी चमक खो वैठता है और जग लग जाता है, उसी प्रकार यदि सावक नित्य सावना न करे तो उसका हृदय मी अपवित्र होने लगता है.

– तोतापुरी

धर्म जीवन की साधना करते हुए अपने आप से पूछो कि कही तुमने ऐसा काम तो नही किया है जो घृणा का हो द्वेष का हो, अथवा शत्रु की भावना को बढ़ाने वाला हो ? इन प्रश्नो का सतोषजनक उत्तर मिले तो समझना चाहिए कि प्रार्थना का, धर्माचरण का आप पर कोई असर जरूर हो रहा है अथवा हुआ है.

— संत तुकडोजी

सुख

सुख अनुकूल है, दुख प्रतिकूल है.

— भ. महावीर

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं जिन्हे जितना ज्यादा दूसरों पर छिडकोंगे उतनी ही खुशबू आप के अन्दर आयेगी.

— एमर्सन

जिस दिन मैं ईश्वर का कोई अपराध नही करता वही दिन मेरे लिए सुख का दिन है.

— हातिम हासम

जीवन जितना ही स्वाभाविक व समतोल होगा उतना ही सुख मिलेगा.

— हरिभाऊ उपाध्याय

नदी का यह किनारा निःश्वास लेकर कहता है—"सामने के किनारे पर ही तमाम सुख है, मुझे इत्मीनान है." नदी के सामने का किनारा गहरी आहे भर-भर कर कहता है. जगत् मे जितना सुख है वह तमाम पहले ही किनारे पर है.

—टैगोर

सुख त्याग में है, भोग में नही.

—श्री ब्रह्म चैतन्य

विद्या के समान नेत्र नही, सत्य के समान तप नही, राग के समान दुख नही और त्याग के समान सुख नही.

—चाणक्य नीति

जो दुखी है, अपने सुख की इच्छा से दुखी है. जो सुखी है, दूसरो के सुख की इच्छा से सुखी है

—अज्ञात

स्त्री के अंग को अपने अंग से और उसके मांस को अपने मांस से दवा कर जो मैं अपने को सुखी समझ रहा था वह सब निरे मोह की विडम्बना थी.

—सस्कृत सूक्ति

जिस प्रकार विना भूख के खाया भोजन नही पचता उसी प्रकार बिना दुख के सुख भी नही पचता.

—गाधी

सुख सर्वत्र विद्यमान है. उसका स्रोत हमारे हृदयो में है.

— रस्किन

❧

सच्चे सुख की इमारत के लिए सच्चाई और भलाई की आवश्यकता है.

— कॉलरिज

❧

'सुख' के बारे में काफी सोचने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वह एक तितली के समान है जो पीछा करने पर पकड़ में नही आती, पर उसकी लालसा नही रखने पर स्वयं आकर हाथ पर बैठ जाती है.

— माटेस्क्यू

हर्ष

सबसे सुन्दर हास्य उसी का है जो अन्त तक हँसता रहे.

— अंग्रेजी लोकोक्ति

❧

मैं हर वस्तु पर हँसने की शीघ्रता इसलिए करता हूँ कि कही मुझे रोना न पड़े.

— ब्यूमार्काइ

❧

जो जवान रोता नही है, जगली है और जो बूढा हँसता नही है, बेवकूफ है.

— जाज सान्तरयन

हँसी अच्छी है. इससे हमारी आत्माओ का उद्धार न भी हो, मगर हमारी जाने अक्सर बच जाती है. इस से पागलपन नहीं होता. हँसी मक्खन की तरह ताजा और साफ होनी चाहिए. गभीर कार्यों की रोटी पर इसे बहुत ज्यादा नही थोपना चाहिए.

— डॉक्टर क्रेन

ज्ञानी को सब से ज्यादा चक्कर में डालने वाली चीज है—बेवकूफी की हसी.

— लार्ड बायरन

अगर कोई कहे कि जमीन मेरी मिलकियत है, तो जमीन हँस देती है ? कजूस को देख कर धन हँस पडता है और रण मे डरने वाले को देख कर काल अट्टहास कर उठता है.

— कवि मेनर

तुम हँसोगे तो ससार हँस पडेगा, किन्तु रोते समय तुम्हे अकेले ही रोना पडेगा. क्योकि यह मर्त्य लोक केवल हास्य का इच्छुक है, रुदन तो इसके पास स्वय अपना ही पर्याप्त है.

— एला व्हीलर विल काक्स

मनुष्यो को संतापों की दाहक अग्नि मे इतना झुलसना पड़ा कि उसे बाध्य होकर हास्य का निर्माण करना पडा.

— नीत्शे

केवल मनुष्य ही ऐसा जीव है, जो हास्य की शक्ति से सम्पन्न है.

— ग्रेविल

हिंसा

किसी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का सार है.

— सूत्र कृतांग

❀

जीव-हिंसा अपनी हिंसा है, जीव-दया अपनी दया है.

— भक्त परिज्ञा

❀

प्रमत्त योग से होने वाला जो प्राण वध है, वह हिंसा है.

— आचार्य उमास्वाति

❀

तू किसी की जान हर्गिज़ नहीं ले.

— बाइबिल

❀

जहाँ मन, वचन और काया से तथाकथित विरोधी को हानि पहुँचाने का इरादा है, वहाँ हिंसा है

— गांधी

❀

यह निश्चित जानो कि चारों गति के जीव जितने भी दुख भोगते हैं, वे सब हिंसा के ही फल है.

— भक्त परिज्ञा

❀

हे मुहम्मद ! यह विश्वास दिला दे कि अल्लाताला की दुनिया को कोई न सतावे.

— कुरान शरीफ

खाने के लिए पशु-पक्षियों का नाश करने वाले आगे पशु-पक्षी ही बनते हैं.

— उपासनी

ओ मुल्ला ! मन को मार, स्वाद का घाट छोड, सब सूरतें सुबहान की है. ऐ गाफिल ! गला न काट.

— रज्जबजी

जो तलवार उठायेंगे, तलवार के घाट उतार दिये जायेंगे.

— बाइबिल

यह मेरा दृढ विश्वास है कि हिंसा पर कोई शाश्वत चीज खड़ी नहीं की जा सकती.

— गांधी

वृक्षों को छिन्न-भिन्न करने से, पशुओं की हत्या करने से, खून-खराबी करने से अगर स्वर्ग मिले तो फिर नरक में कौन जायेगा ?

— संस्कृत रत्नाकर

मारेगा तो तू भी मारा जायेगा और जो तुझे मारेगा वह भी मारा जायेगा.

— स्पेनी कहावत

हजार इबादत करें, हजार दान करें, हजार जागरण करें, हजार भजन करें, हजार रोजे रखें, हजार नमाज पढें—कुछ कुबूल न होगा, अगर किसी का दिल आपने दुखा दिया.

— शेख सादी

जो प्राणियो की हिंसा स्वयं करता है, दूसरो से कराता है या हिंसा करने वाले का अनुमोदन करता है वह ससार मे अपने लिए वैर को बढाता है.

— भ महावीर

क्षमा

मैं सब जीवो को क्षमा करता हू, सब जीव मुझे क्षमा करें. सब जीवो से मेरी मित्रता है, मेरा किसी से भी वैर नही है.

— भ. महावीर

मानव कभी इतना सुन्दर नहीं लगता है जितना कि उस समय जब वह क्षमा के लिए प्रार्थना कर रहा हो या जब वह किसी को क्षमा प्रदान कर रहा हो.

— रिचटर

क्षमा के समुद्र को क्रोध की चिन्गारी से गरम नही किया जा सकता.

— सुभाषित संचय

क्षमा करना अच्छा है, भूल जाना सब से अच्छा है

— ब्राउनिंग

हे सर्वशक्तिमान् परमात्मा ! यदि तू सचमुच भगवान है, तो मेरे अपराधो को क्षमा कर; क्योंकि तू भी कभी मेरे समान ही इन्सान रहा होगा ?

— कवि केनकू

हे पिता ! इनको (मुझे सूली पर चढ़ाने वालो को) क्षमा कर, क्योंकि ये नही जानते कि हम क्या कर रहे हैं.

— ईसा मसीह

❑

जब तू यज्ञ में बलि देने जाय, तब तुझे याद आए कि तेरे और तेरे भाई के बीच वैर है, तो वापस हो जा और समझौता कर.

— ईसा मसीह

❑

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उनको क्या जो दन्तहीन,
विषरहित विनीत हो।

— दिनकर

ज्ञान

विनय भाव से सीखा हुआ ज्ञान इस लोक और परलोक दोनो जगह फलदायी होता है.

— बृहत्कल्प भाष्य

❑

श्रद्धाहीन को ज्ञान नही होता, ज्ञानहीन को आचरण नहीं होता, आचरणहीन को मोक्ष नही मिलता, और मोक्ष पाये बिना निर्वाण-पूर्ण शान्ति नही मिलती.

— उत्तराध्ययन सूत्र

साधक ज्ञान से जीवन-तत्त्वो को जानता है.

– भ महावीर

घर में यदि दीपक न जले तो वह दारीद्रय का चिन्ह है, हृदय में ज्ञान का दीपक जलाना चाहिए. हृदय मे ज्ञान का दीपक जला कर उसको देखो.

– रामकृष्ण परमहंस

जिस प्रकार जीवन बचपन से प्रारभ होता है, उसी प्रकार ज्ञान वैराग्य से उत्पन्न होता है.

– सत वचन

बहुत सी वस्तुओ का अपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा अज्ञानता में विचरना श्रेयष्कर है.

– नीत्से

ज्यो-ज्यो हम ज्ञान प्राप्त करते जाते है, त्यो-त्यो हम अपने पूर्वजो को अपनी अपेक्षा मूर्ख एवं अलपज्ञ समझते है किन्तु निःसन्देह हमारी आने वाली पीढी हमारे प्रति भी यही विचार करेगी.

– पोप

ज्ञान तो अजस्र प्रवाहित स्रोतो से पूर्ण कूप के समान है, और तुम्हारा मस्तिष्क एक छोटी सी बाल्टी के समान है. तुम उतना ही प्राप्त कर सकते हो जितनी तुम्हारी ग्रहण-शक्ति हो.

– डॉ. हरदयाल

जो अतीव ज्ञान वढाता है वह अपने दुखो को भी वढ़ाता है.

— वाइविल

❧

एक दिन फूल ने आर्तभाव से पुकारा—मेरे प्राण ! फल, तुम कहा हो ? फल ने सस्मित उत्तर दिया—नही जानते, मैं तुम्हारे ही अन्तर मे छिपा वैठा हू

— रविन्द्रनाथ

❧

हम दुर्वल है, इस कारण गलती करते है और हम अज्ञानी हैं, इसलिए दुर्वल है. हमे अज्ञानी कौन वनाता है—हम स्वय ही. हम अपनी आखो को अपने हाथो से ढक लेते हैं और अन्धेरा है, कह कर रोते है.

— स्वामी विवेकानन्द

❧

समुद्र मे रहने वाला बिन्दु समुद्र की महत्ता का उपभोग करता है, परन्तु उसका उसे ज्ञान नही होता. समुद्र से अलग होकर ज्योही अपने-पन का दावा करने चला कि वह उसी क्षण सूखा. इस जीवन को पानी के वुलवुले की उपमा दी गई है, इसमे मुझे जरा भी अति-शयोक्ति नही दिखाई देती.

— गाधी

❧

जो दूसरो को जानता है वह शिक्षित है, किन्तु जो स्वय को पहचानता है वह वुद्धिमान है.

— लाओ-जे

जितना ही हम अधिक अध्ययन करते है उतना ही अधिक ज्ञान आता है. जितनी अधिक हम तपस्या करते है, हमें यह ज्ञात होता जाता है कि हम कितने अल्पज्ञानी है.

— वाल्तेयर

ज्ञान इच्छा की आँख है, यह आत्मा की किश्ती को पार करने वाला बन सकता है

— विल ड्यूरेन्ट

ज्ञान और क्रिया जीवन की दो महत्त्वपूर्ण पाँखें है, जिसके द्वारा मानव अनन्त सुखाकाश मे सहज उड़ान भर सकता है.

— जैन दर्शन